प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ.. सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

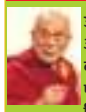

उस समय आप सब कुछ कर पाएँगे, जिसे समय आप अपनी क्षमताओं को जान लेंगे।

दलाई लामा

वर्ष-03, अंक-05 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 05 अक्टूबर 2020 पृष्ठ-8, मूल्य-5 रुपए

मनी लॉन्ड्रिंग मामले को लेकर प्रवर्तन निदेशालय के केरल में कई जगह छापे मारी की कार्रवाई

बेंगलुरु, ऐजेन्सी। प्रवर्तन निदेशालय ने केरल सीपीआई (एम) के सचिव कोडियेरी बालाकृष्णन के बेटे विनेश कोडियेरी के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग मामले की जांच करते हुए बुधवार को उनके घर पर तलाशी ली, साथ ही शहर के कई स्थानों और केरल के विभिन्न हिस्सों में भी तलाशी अभियान चलाया गया। सूत्रों ने बताया कि, बेंगलुरु की एक ईडी टीम ने यहां और उत्तरी केरल के कई स्थानों के अलावा उसके घर पर भी तलाशी ली।

बेंगलुरु की एक विशेष अदालत ने सोमवार को प्रवर्तन निदेशालय को विनेश की हिरासत पांच दिन और बढ़ा दी थी। ईडी ने विनेश को मनी लॉन्ड्रिंग मामलों से निपटने के लिए विशेष अदालत के समक्ष पेश किया था, क्योंकि चार दिन की हिरासत 2 नवंबर को समाप्त हो गई थी। एजेंसी ने कर्नाटक में एक ड्रग जब्ती से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में विनेश को 29 अक्टूबर को गिरफ्तार किया और उसे पूछताछ के लिए चार दिनों के लिए अपनी हिरासत में ले लिया। रविवार की रात को, उन्होंने कमर दर्द की शिकायत की जिसके बाद उन्हें उस शहर के बॉरिंग अस्पताल में जांच के लिए ले जाया गया।

एलएसी पर भीषण ठंड से निपटने को सेना तैयार, अमेरिका से मिले खास गर्म कपड़े

नई दिल्ली, एजेंसी।

पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर चीन के साथ ही भीषण ठंड से मुकाबला करने को भारतीय सैनिक पूरी तरह तैयार है। चीनी सीमा पर तैनात सैनिकों के लिए अमेरिका ने विशेष गर्म कपड़ों की खेप भेजी है। सरकारी सूत्रों ने बताया कि, अमेरिकी सुरक्षा बलों द्वारा भीषण ठंडे मौसम में इस्तेमाल होने वाले कपड़ों की खेप मिली है। इन कपड़ों का इस्तेमाल हमारे सैनिक कर रहे हैं।

सूत्रों के मुताबिक, सेना पूर्वी लद्दाख सेक्टर और सियाचिन में पश्चिमी मोर्चे समेत पूरे लद्दाख में तैनात सैनिकों के लिए 60 हजार कपड़ों के सेट का स्टोरेज रखती है। इस साल इनमें 30 हजार सेट की आवश्यकता थी, क्योंकि चीन की आक्रामकता को देखते हुए सीमा पर करीब 90 हजार सैनिकों को तैनात किया गया है।

अत्यधिक ठंडे मौसम में पहने जाने वाले इन कपड़ों की आपात खरीद से हमारी सेना को काफी मदद मिलेगी। भारत ने एलएसी पर दो अतिरिक्त डिविजन को तैनात किया है, जिन्हें मैदानी व पहाड़ी क्षेत्र से बुलाया गया है। इन्हें कई वर्षों से ऊंचाई वाले इलाकों में अभियानों के लिए प्रशिक्षित किया गया है।

जांच के दौरान चलती रही दावतें और होती रही सेवा-पानी

चोर के हाथ में थमाया जांच का उस्तरा, शिकायत के सभी तथ्यों को रखा ताख में

अधिकारियों ने अपनी कारस्तानी छुपाने के लिए सहायक ग्रेट दो के कर्मचारियों को सौंपी जांच

माही की गूंज, झाबुआ।

आदिवासी विकास विभाग पेटलावद में पदस्थ बाबू रामचंद्र अटकान ओर विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों का काला चिट्ठा गूंज की सीरीज के माध्यम से मय दस्तावेजो ओर सबूतों के साथ उजागर की गई। वेसे तो पूरा मामला पानी की तरह साफ था, बस हिम्मत और ईमानदारी से की गई रमेश धानुक की शिकायत पर केवल ईमानदारी से उच्च स्तरीय जांच की आवश्यकता थी, लेकिन जिस अधिकारियों पर भ्रष्टाचार ओर फर्जी नियुक्तियो में शामिल होने के आरोप लगे थे, भोपाली अधिकारियों ने जांच को रफ-दफ करने के लिए उन्ही अधिकारियों को यानी चोर के हाथ में ही जांच का उस्तरा थमा कर मामले की जांच करने के आदेश जारी कर दिए जो खुद पूरे मामले में शामिल थे या कहा जाए तो बाबू रामचंद्र अटकान भी इतना दोषी नही जितना की जिम्मेदार अधिकारी जिन्होंने शासन से लेकर न्यायालय द्वारा जारी भर्ती प्रक्रिया के संबंध में जारी आदेशो के विपरीत जिन्होने आदेश व निर्देश जारी कर रखे हैं।

सहायक ग्रेट दो की दो सदस्यीय टीम को भेजा जाच करने

शिकायतकर्ता रमेश धानुक की लगातार शिकायत और पुख्ता प्रमाण के साथ कि गई शिकायत के बाद मामले में दिखावे की जाच होना तय थी, ऐसा ही कुछ हुआ भी। रमेश धानुक की शिकायत के बाद आयुक्त आदिवासी विकास मध्यप्रदेश भोपाल के द्वारा सहायक आयुक्त झाबुआ को जारी पत्र क्रमांक/स्था.6/शिका./सी.3/303/2017/29693 भोपाल 13 नवम्बर 2019 को बाबू रामचंद्र अटकान के परिवार की थोक बन्द हुई नियुक्तियो की जांच के आदेश जारी किए। भोपाल से पत्र जारी होने के 40 दिन बाद सहायक आयुक्त झाबुआ द्वारा आदेश क्रमांक/स्था.3/शिकायत/2019/15165 झाबुआ 23 दिसम्बर 2019 को जारी करते हुए दो सदस्यीय टीम जिसमे आदिवासी विकास विभाग के सहायक ग्रेट दो के कर्मचारी नरेंद्र भिड़े और जी.एस. चित्तोडिया को मामले की जाच कर तीन दिवस में प्रतिवेदन उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। अब दो सदस्यी जाच दल के कर्मचारियों को अपने ही विभाग के बड़े अधिकारियों सहित प्राचार्य, सहायक ग्रेट एक ओर अपने समकक्ष ग्रेट दो के बाबू की जाच करनी थी, सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है, जिन अधिकारियों के अधिनस्त ये कर्मचारी कार्य कर रहे हैं, वो कर्मचारी अपने अधिकारी के विरूद्ध कैसे जाच का उस्तरा चलाकर जाएंगे और हुआ भी वही, पूरी शिकायत ओर उसकी जाच को तोड़-मरोड़ कर सभी की गर्दन को बचाते हुए सभी को पाक-साफघोषित कर दिया गया। इतना ही नही पूरी जाच में अधिकारियों की भूमिका का कोई उल्लेख तक नही किया।

गौतमोत जाव दावनो के साथ सहायक आयुक्त झाबुआ ने भेजा आदिवासी विकास म.प्र. भोपाल को प्रतिवेदन।

भोवाती आदेश के बाद सहायक ग्रेट 2 के दो कर्मचारी को दिया जांच हेतु नियुक्ती आदेश।

जाच दल की सेवा चाकरी में लगा विभाग का भ्रष्ट कुनबा

वेसे तो भोपाल से जाच के आदेश जारी होने के 40 दिन बाद जिले के सहायक आयुक्त ने जाच के लिए टीम गठित कर जता दिया था कि, जाच में कुछ नही निकलने वाला फिर भी जाच के नाम पर पिंडोल करना था जो किया गया। जाच दल में शामिल कर्मचारी अपने साथियों के साथ कन्या परिसर पेटलावद आकर जाच के लिए सभी पक्षो के बयान दर्ज कर रहे थे, जाच प्रभावित नही हो इसलिए पूरे प्रकरण के सूत्रधार बाबू रामचंद्र अटकान को कन्या परिसर से हटाकर बीईओ कार्यालय भेज दिया गया था, लेकिन जाच दल की कार्रवाई के दौरान बाबू अटकान पूरे समय जांच दल के इर्द-गिर्द ही रहा ओर विभागीय कुनबा उनकी सेवा चाकरी में लगे रहे थे की जानकारी मिल रही है।

एक विभाग के बाबू ने बताया कि, जांच दल के साथ एक बार उसे भी जाने का मौका मिला जहा जाच दल के लिए समय-समय पर चाय, नाश्ता, रबड़ी, मावाबाटी और शाम होने के बाद थांदला रोड के एक ढाबे पर खाने-पीने का पूरा इंतज़ाम होता था और ये पूरी व्यवस्था कौन ओर क्यो करता था इसको समझा जा सकता है। लेकिन जाच दल के मामले में किए गए निष्कर्ष से सब साफहो जाएगा कि, पूरी व्यवस्था के पीछे कौन था।

पूरी जांच में हुए बड़े खुलासे को भी कैसे घोलकर पी गए जांच अधिकारी की रिपोर्ट पर बड़ा खुलासा करेंगे अगले अंक में जिसके बाद इस पूरे भ्रष्टाचार और फर्जी नियुक्ति घोटाले पर से पर्दा जरूर उठ जाएगा।

निरन्तर...

गुर्जर आंदोलनः कर्नल बैंसला की बढ़ी मुसीबतें, पंच पटेलों ने की अपील आंदोलन को करे खत्म

जयपुर एजेंसी। राजस्थान में चल रहा गुर्जर आंदोलन फिलहाल थमने का नाम नहीं ले रहा है, प्रदेश में कोरोना संकट के बीच जारी गुर्जर आंदोलन में रेल यातायात और सड़क मार्ग अवरूद्ध है। वहीं कर्नल किरोड़ी बैंसला सहित कई गुर्जर नेता के पटरियों पर बैठने से आमजन का जीवन भी बेपटरी हो गया है, इस आंदोलन का सीधा प्रभाव देखने को मिल रहा है। बातचीत का रास्ता तलाश रही राज्य सरकार को गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति के अध्यक्ष और आंदोलन के नेतृत्वकर्ता गुर्जर नेता कर्नल किरोड़ी बैंसला बातचीत से आंदोलन को खत्म करने के समाधान को लेकर तैयार हो गए हैं।

कर्नल की बढ़ी मुसीबतें, गुर्जर नेता भी हुए खिलाफ

मौजूदा हालातों को देखते हुए कर्नल बैंसला रेलवे ट्रेक के अलावा किसी दूसरे स्थान पर बात करने के लिए तैयार हैं। वहीं गुर्जर समाज के पंच पटेलों ने इस आंदोलन के खिलाफपंचायत की है।

बता दें कि, भरतपुर के बयाना इलाके में लगातार तीन दिन से गुर्जर आंदोलन जारी है लेकिन गुर्जर समाज के पंच पटेलों ने आह्वान किया है कि, सरकार द्वारा सारी मांगे को मान लेने के पश्चात आंदोलन क्यों किया जा रहा है। पंच पटेलों ने कहा कि, कर्नल साहब हमारे इलाके में शांति बनाए रखने के लिए इस आंदोलन को बंद करें।

शिवराज सरकार के लिए आत्म चिंतन का समय, चौथी बार भी हावी है नौकरशाही

माही की गूंज, झाबुआ। संजय भटेवरा

उपचुनाव संपन्न होने के बाद तमाम राजनीतिक विश्लेषक यह मान रहे हैं कि, फिलहाल प्रदेश में शिव का ही राज चलता रहेगा, यानी सरकार के पूर्ण बहुमत के लिए आवश्यक सीटें मिल जाएगी। लेकिन फिर भी मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के लिए यह समय आत्ममुग्धता का नहीं होकर चिंतन व मनन करने का है, क्योंकि 2018 के विधानसभा चुनाव के पूर्व में भी प्रदेश में भाजपा की शिवराज सिंह चौहान की सरकार थी और मुख्यमंत्री पूरे चुनाव में भाजपा का मुख्य चेहरा थे। मुख्यमंत्री पद के एकमात्र दावेदार थे और खुद शिवराज सिंह चौहान ने पूरे प्रदेश की लगभग हर विधानसभा में पहुंचकर अपनी योजनाओं का बखान किया था और आगे भी योजनाओं को आम जनता के सामने रखा था, लेकिन प्रदेश की जनता ने अपना जनादेश मुख्यमंत्री के तमाम दावों के बावजूद कांग्रेस के पक्ष में दिया था। इसका मतलब साफ यह था कि, जनता ने मुख्यमंत्री की योजनाओं और योजनाओं के क्रियान्वयन के दावे को नकार कर प्रदेश में 15 वर्षों के बाद प्रदेश में कांग्रेस की वापसी की थी।

कांग्रेस अपने कुनबे को संभालने में रही विफल

अब यह बात अलग है कि, कांग्रेस अपने कुनबे को संभाल नहीं पाई और 15 महीनों में ही कांग्रेस की सरकार गिर गई तथा प्रदेश में एक बार फिर शिवराज सिंह चौहान की सरकार बन गई, लेकिन इसका यह कतई मतलब नहीं है कि, शिवराज सिंह चौहान की नीतियों पर जनता की मुहर लग गई। शिवराज सिंह चौहान ने मुख्यमंत्री बनने के बाद से ही फिर एक के बाद एक अपनी पुरानी घोषणाएं और योजनाओं का बखान करना शुरू कर दिया और एक बार फिर योजनाएं जिनको जनता नकार चुकी थी, प्रारंभ करने की घोषणा कर दी और वे सारी योजनाएं पुनः प्रारंभ कर दी। लेकिन सरकार को इस बात पर गंभीरता के साथ विचार करना चाहिए कि, अगर वे योजनाएं इतनी ही अच्छी थी और जनता के लिए हितेषी थी तो आम जनता ने इसे नकारा क्यों?

शिवराज सरकार पर नौकरशाही हावी होने के आरोप पहले भी लगते रहे हैं और चौथी बार मुख्यमंत्री बनने के बाद फिर इस तरह के आरोप-प्रतिआरोप प्रारंभ हो गए हैं, इस पर भी सरकार को चिंतन करना आवश्यक है। वही अभी तक तो भाजपा के असंतुष्टों को चुनाव के नाम पर रोक कर रखा गया था, भाजपा में भी असंतुष्टों का गुबार फुल रहा है, समय रहते इस दिशा में कोई ठोस कार्य नहीं किया गया तो यह गुबार कभी भी फूट सकता है। वहीं कांग्रेस से भाजपा में आए नए कार्यकर्ताओं की अपेक्षाओं को पूरा करना भी शिवराज सरकार के लिए किसी चुनौती से कम नहीं होगा।

भाजपा को उपचुनाव में मिल जाएगा बहुमत...!

अब बात करें उपचुनाव के परिणामों पर, तो फिलहाल यही दिखाई दे रहा है कि, भाजपा अपनी सरकार बचाए रखने में सफल रहेगी, लेकिन अगर कांग्रेस 15 से उपर सीटें जीत लेती है तो भले ही कांग्रेस सरकार तो नहीं बना सकती है, लेकिन सरकार में हलचल पैदा अवश्य कर सकती है और फिर कांग्रेस की कोशिश यही रहेगी कि, वह भाजपा में किसी ज्योतिरादित्य सिंधिया की तलाश करें जो अपने 10-12 समर्थकों के साथ कांग्रेस में शामिल होकर कांग्रेस की सरकार बना दे। अभी यह केवल कल्पना मात्र है, क्योंकि अभी ना तो 28 विधानसभा उपचुनाव के परिणाम आए हैं और ना ऐसी कोई स्थिति बनी है, लेकिन राजनीति में कब यह हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता है।

चुनाव लोकतंत्र का उत्सव होता है

बहरहाल उपचुनाव के परिणामों के बाद अगर शिवराज सिंह चौहान की भाजपा सरकार बनी रहती है तो उसे अपनी नीतियों, योजनाओं, घोषणाओं और नौकरशाही पर नियंत्रण अवश्य ही रखना होगा। साथ ही शिवराज सिंह चौहान को भी आत्म चिंतन अवश्य करना पड़ेगा कि, इतनी योजनाओं के बावजूद उपचुनाव में उन्हें इतना अधीर प्रचोर क्यों करना पड़ा, साथ ही दोनों दलों के कार्यकर्ताओं के लिए भी चिंतन का विषय यह है कि, चुनाव तो आते-जाते रहेंगे राजनीतिक विचारधारा अपनी जगह है, लेकिन आपसी संबंध खराब नहीं होने चाहिए, क्योंकि इस चुनाव में जितनी कटुता देखने को मिली उतनी मध्यप्रदेश के चुनावी इतिहास में कभी नहीं मिली। चुनाव लोकतंत्र का उत्सव होता है, लेकिन राजनीतिक व्यंग बाणों और कटुता ने इसे प्रशासन के लिए टेंशन बना दिया है, बेहतर होगा राजनीतिक दल चुनाव को उत्सव ही बना रहने दे उसे टेंशन न बनाए।

क्यों हुई अर्नब गोस्वामी की गिरफ्तारी, क्या है पूरा मामला

मुंबई ऐजेन्सी। मुंबई एक हाइवोल्टेज घटनाक्रम देखने को मिला, जिसमें मुंबई पुलिस द्वारा रिपब्लिक टीवी के एडिटर-इन-चीफ अर्नब गोस्वामी को गिरफ्तार कर लिया गया। रिपब्लिक टीवी ने बताया कि, मुंबई पुलिस की एक टीम सुबह अर्नब के घर पहुंची और अपनी वैन में बैठाकर साथ ले गई। अर्नब ने कहा है कि, उनके साथ पुलिस ने मारपीट की है इसके साथ ही अर्नब ने पुलिस पर उनकी पत्नी, बेटे और सास-ससुर के साथ हाथापाई करने का भी आरोप लगाया है। न्यूज एजेंसी एएनआई के मुताबिक अर्नब को उनके घर से अलीबाग पुलिस स्टेशन ले जाया गया है। इस मामले में मुंबई पुलिस और महाराष्ट्र सरकार, केंद्र सरकार के कई मंत्रियों के रडार पर आ गई है। अमित शाह से लेकर कई मंत्रियों ने इसको लेकर टिप्पणी की है।

क्यों हुई अर्नब की गिरफ्तारी?

अर्नब गोस्वामी की गिरफ्तारी के बाद काफी देर तक इस बात को लेकर असमंजस बना रहा कि, आखिर अर्नब की गिरफ्तारी हुई क्यों? लेकिन कुछ देर बाद न्यूज एजेंसी पीटीआइ ने पुलिस के हवाले से जानकारी देते हुए साफ किया कि, अर्नब गोस्वामी को एक इंटीरियर डिज़ाइनर की आत्महत्या से जुड़े मामले में गिरफ्तार किया गया है। रिपब्लिक टीवी का दावा है कि, अर्नब को उस मामले में गिरफ्तार किया गया है, जो पहले ही बंद किया जा चुका है, लेकिन अब इस मामले में दोबारा जांच के आदेश दिए गए हैं।

यह है मामला: अर्नब की गिरफ्तारी का मामला एक इंटीरियर डिज़ाइनर अन्वय नाईक की कथित आत्महत्या से जुड़ा है। समाचार एजेंसी पीटीआई ने एक अधिकारी के हवाले से जानकारी दी कि, 2018 में मुंबई में एक इंटीरियर डिज़ाइनर और उसकी मां ने आत्महत्या कर ली। इस साल मई में महाराष्ट्र के गृह मंत्री अनिल देशमुख ने घोषणा की थी कि, इस मामले में फिर से जांच की गई है। उन्होंने बताया कि, इंटीरियर डिज़ाइनर अन्वय नाईक की बेटी अदन्या नाईक द्वारा एक ताजा शिकायत पर इस मामले में दोबारा जांच के आदेश दिए गए हैं। महाराष्ट्र के गृह मंत्री अनिल देशमुख ने कहा कि, अदन्या ने आरोप लगाया कि, अलीबाग पुलिस ने अर्नब गोस्वामी के चैनल से बकाया भुगतान न करने की जांच नहीं की थी, उन्होंने दावा किया कि इसी कारण उसने अपने पिता को छोड़ दिया और मई 2018 में दादी ने आत्महत्या कर ली।

बंद एटीएम कार्ड को चालू करने का झांसा देकर हजारों की ठगी

भोपाल

अयोध्यानगर थानाक्षेत्र का मामला

ऑनलाइन पढ़ाई से दुखी 11वीं के छात्र ने फांसी लगाकर की खुदकुशी

भोपाल

नौकरी जाने से दुखी इंजीनियर ने ट्रेन से कटकर दी जान

सिंधिया ने हमारी पीठ में छुरा घोंप दियाः पटवारी

मनचले ने की छेड़खानी, विरोध कर रही मां को पीटा

भोपाल

पहले दिन द्वितीय व तृतीय वर्ष के 14 हजार विद्यार्थी हुए प्रमोट

भोपाल

दीनदयाल रसोई में भोजन करना होगा महंगा अब 5 नहीं, 10 रुपए में गरीबों को मिलेगा खाना

भोपाल

बदमाशों ने आधा दर्जन गाड़ियों को फूंका

छोला पुलिस ने लुटेरी दुल्हन को दबोचा

भोपाल

दतिया, नौगांव, रायसेन, उमरिया और रीवा में 10 डिग्री पर आया न्यूनतम तापमान

ठंड में और इजाफा, भोपाल में पारा 12.6 डिग्री

भोपाल

[illegible]

तारीख	वर्ष	तापमान
21	2010	18.4
30	2011	15.6
18	2012	13.6
16	2013	14.2
18	2014	15.8
20	2015	17.8
20	2016	12.8
25	2017	14.3
09	2018	15.1
19	2019	17.2

पीपुल्स यूनिवर्सिटी की कार लेकर चंपत हुआ ड्राइवर

भोपाल

दिलीप देवाणा की भाजपा में वापसी

माही की गूंज, मेघनगर। मेघनगर युवा कांग्रेस के अध्यक्ष दिलीप देवाणा ने मंगलवार को एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी में शामिल होकर घर वापसी की। देवाणा पहले भारतीय जनता पार्टी में थे लेकिन किन्ही करणो से भाजपा छोड़ 2016-17 में कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की थी। दिलीप ने बताया कि, कांग्रेस में कार्यकर्ताओं को मान-सम्मान नहीं दिया जाता है, अब वह भारतीय जनता पार्टी की रीति-नीति देख और उसे समझकर भारतीय जनता पार्टी पुनः घर वापसी की।

हिंदू देवी-देवता के फोटो लगे फटाके अगर दुकानों पे बिके तो विरोध करेगी करणी सेना

माही की गूंज, रतलाम। जिले में राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना सोशल मीडिया के माध्यम से लोगो से अपील कर रही कि, देवी-देवताओं के चित्र छपे हुए फटाके व्यापारियो से नही खरीदे, करणी सेना का कहना है कि, देवी-देवताओं के चित्रो को फटाकों पे दर्शाते हैं, फटाके जलने के बाद इन चित्रों की बैअदबी होती है, जिससे लोगों की धार्मिक भावना को ठेस पहुचती है। करणी सेना का कहना है कि, देवी-देवताओं के लगे फोटो पर शासन-प्रशासन बिक्री बंद करवाए व फटाकों के ऊपर देवी-देवताओं के चित्र लगाना बन्द करे, क्योकी फटाके जलने के बाद उनकी खाली डिब्बियां पैरो में आती है, जिससे देवताओं का अपमान होता हैं। देवी-देवता पूज्यनीय है इसलिए उनकी फोटो को फटाकों पे लगाने पर पाबंदी लगाना चाहिए।

पंचायत में स्वीकृत हुए 72 लाख रूपए, फिर भी नल-जल योजना की हालत खराब

माही की गूंज, खत्तरटोड़ी। विकास सावलिया

ग्राम पंचायत में 72 लाख की मुख्यमंत्री ग्राम नल जल योजना के हाल अब भी बेहाल है, लिहाजा योजना के तहत मिलने वाला पानी कई फलियों तक नहीं पहुंच पा रहा है, जिससे ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है। नया गांव खालसा में ठेकेदार द्वारा नल तो काफी समय पहले लगा दिए गए थे, लेकिन आज तक इन नलो में पानी नही आया। नाई टोडी में लाईन तो कब की डाल दी, लेकिन अभी तक नल नही लगाए है, इसके अलावा दो फलियों में भी पानी सप्लाय नही किया जा रहा है। वही लुहारटोडी गांव में पिछले एक माह से वॉल्व खराब होने के कारण पानी नही दिया जा रहा है। पीएचई अधिकारी ओर ठेकेदार को कई बार अवगत करवाया गया लेकिन अभी तक भी वॉल्व नही सुधरा, गांव में समस्या जस की तस बनी हुई है।

ग्रामीणों को भरपूर पानी मिल सके, इसके लिए ग्राम पंचायत में 72 लाख की पेयजल योजना स्वीकृत हुई थी, गांव में योजना के तहत सूरत (गुजरात) के ठेकेदार ने 50 हजार लीटर पानी की क्षमता वाली टंकी का निर्माण किया है, इसके अलावा गांव में करीब 4 किलोमीटर पाइप लाइन डाली गई है, लेकिन ठेकेदार द्वारा इस काम में भी कई खामियां छोड़ी दी गई है। लाईन डालते वक जो रोड तोडे गए है योजना के अनुसार ठेकेदार को यह रिपेयर करना था लेकिन रिपेयर नही किया गया।

खुले पड़े है ट्युबवेल

पानी की कमी न हो इसलिए पीएचई विभाग ने पंचायत में दो ट्युबवेल लगवाए थे, लेकिन अभी तक इन्हें पाइपलाइन से नही जोड़ा गया। विभाग की लापरवाही के चलते दोनो ट्युबवेल के मुह खुले ही छोड रखे है।

वॉल्व नही लगाने से पेयजल समस्या

वॉल्वमैन के अनुसार वॉल्व की कमी के कारण गांव में पानी नही जा रहा है। गांव में तीन वाल्व लग जाते है तो, पेयजल समस्या से थोडी निजात मिल सकती है। ठेकेदार को दो साल तक पानी नलों तक पहुचाना था, मेंटनेस कार्य भी करना था। इसके लिए ठेकेदार को पीएचई विभाग की ओर से राशि दी गई, लेकिन ठेकेदार द्वारा काफी लापरवाही की जा रही है। ग्राम में कई फलियों मे अभी तक पानी नही पहुचा है, इसके अलावा लुहारटोडी गांव में पिछले एक महिने से वॉल्व खराब था, इसके कारण पानी गांव में सप्लाय नही हो पा रहा था। कई बार पीएचई विभाग के अफ्सर ओर ठेकेदार को कहा गया लेकिन समस्या का समाधान नही किया गया। अब गांव के युवाओं ने खुद मिलकर पाईलाईन को खोद कर खराब वॉल्व को निकाला गया।

सीएम हेल्पलाईन शिकायत की बंद

पेयजल समस्या से जुझ रहे ग्रामीणों ने सीएम हेल्पलाईन पर शिकायत की थी, जांच में पीएचई विभाग के अधिकारियों ने दावा किया कि, गांव के सभी नलों में पानी सुचारु रुप से जा रहा है और शिकायत को 7 महिनें बाद बंद कर दिया, लेकिन वास्तविक में ग्रामीण आज भी पेयजल समस्या से जुझ रहे हे।

कलेक्टर को करेगे शिकायत

ग्रामिणो का कहना है कि, ठेकेदार द्वारा काफी लापरवाही की जा रही है, स्वयं हम सभी ने गड्ढा खोदकर खराब वॉल्व को निकाला, जबकि यह काम ठेकेदार को करना था। इसके अलावा इस योजना में भ्रष्टाचार भी बहुत हुआ है, रोड खोद दिए गए लेकिन अभी तक रिपेयर नही किए गए है। इसकी शिकायत सोमवार को कलेक्टर से करेंगें।

अजजा वर्ग की नाबालिग लड़कियों के प्रति बढ़ते अपराधों को लेकर पुलिस प्रशासन नहीं करता समय पर कार्रवाई

थानों पर चल रही भांजगड़ी के बीच निपट जाते हैं नाबालिक लड़कियो से हुए अपराध

माही की गूंज, पेटलावद।

आदिवासी अंचल में लकड़ा-लडकी के आपस मे प्रेम करने और घर से भाग जाने का एक तरह से रिवाज सा बन गया है, कई बार आपसी समझौते से तो कई बार पुलिस की मध्यस्थता के साथ मामले निपटा दिए जाते है, तो कई बार स्थितिया प्रशासन के हाथो से बहार भी चली जाती हैं। निपटारा होने तक लड़के के परिवार की गाव में इंट्री बन्द होने के साथ-साथ उनकी चल-अचल संपत्ति को भी नुकसान पहुचा दिया जाता हैं और आदिवासी परम्परा से निपटारा होने तक विवाद की स्थिति बनी हुई रहती हैं।

ऐसे मामलो में प्राय: पुलिस अंत तक समझौते का इंतजार करती हैं और प्रकरण दर्ज नही करती हैं। जिले में चल रही परंपरा को निभाने में पुलिस प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग कर रही है, लेकिन कानून की भाषा मे जिसे अपराध कहा जाता है उस संज्ञा को भूल जाते हैं। महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों के लिए कड़े कानून बने हुए है और नए ओर सख्त कानून बनाए जाने की मांग भी उठ रही है। नाबालिक के साथ होने वाले अपराधों को लेकर सरकारें ओर भी ज्यादा गम्भीर ओर सख्त हैं, लेकिन सारे कानून जिले में आकर परंपरा की चादर ओढ़ लेते हैं, जिसके चलते पुलिस नाबालिक लड़कियों से जुड़े मामलों में भी ढिलाई दिखा देती है। नियम अनुसार 24 घंटे में अपराध दर्ज करने की बजाय आपसी भांजगड़ी का इंतजार करती है जिसमें संबंधित चौकी थाने का आर्थिक लाभ भी जुड़ा होता हैं। पेटलावद थाना क्षेत्र में ऐसे मामले सामने आए हैं जिसकी जानकारी के बाद नाबालिक लड़कियों के प्रति हो रहे अपराधों में पुलिस द्वारा समय रहते कार्रवाई नही की गई।

मामला- 1: परिवार ने लगाया अपहरणकर्ता और उसके परिवार पर हत्या का आरोप

6 अक्टूबर को पेटलावद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में हुई एक लड़की की मौत मामले में लड़की के परिवार ने लड़की को जबरन बहला-फुसलाकर भगाकर जबरन पत्नी बनाकर रखने वाले युवक और उसके परिवार के लगभग 15 सदस्यों पर लड़की को मारने का आरोप लगाते हुए पुलिस चौकी पर आवेदन सौपा है। मामला पेटलावद थाना क्षेत्र की करवड़ चौकी का है जहा सुठवाडिया निवासी लच्छा पिता नानजी खड़िया ने उसकी नाबालिक पुत्री की हत्या करने का आरोप लगाते हुए बताया कि, खुशाल पिता नरसिंह निनामा निवासी सुठवाडिया उसकी नाबालिक पुत्री पपीता को बहला-फुसलाकर भगा ले गया था जिसकी रिपोर्ट भी पुलिस में दर्ज करवाई थी लेकिन पुलिस पुत्री को भगाने वाले को नही पकड़ सकी।

लड़की के पिता ने बताया कि, 6 अक्टूबर को लड़की को अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती करवाया गया था जहा उसकी मौत हो गई, इसकी जानकारी हमको 7 अक्टूबर को मिली जिसके बाद परिवार को लोग अस्पताल पहुचे, जहा लड़की मरी हुई मिली और लड़की के शरीर पर चोट के निशान थे जो कि मारपीट के लग रहे थे और लड़की को भगाने वाले खुशाल ओर उसके परिवार के लोगो ने मारपीट कर मौत के घाट उतार दिया। ग्रतक लड़की के पिता ने करवड़ चौकी पर रिपोर्ट देकर कार्रवाई की मांग की है। मृतक लड़की के परिजनों द्वारा पूर्व में 9 दिसम्बर 2019 को भी शिकायत की गई थी कि, उनकी नाबालिक पुत्री का अपहरण किया गया है लेकिन पुलिस द्वारा मामले में संज्ञान तक नही लिया गया।

मामला -2: 18 अगस्त से गायब है नाबालिक अब तक नही हुआ मामला दर्ज

पेटलावद थाना क्षेत्र के ग्राम बड़ी देहदी निवासी तेरसिह पिता हेमराज सोलंकी ने 3 नवम्बर को थाने पर रिपोर्ट दे कर बताया कि, उनकी नाबालिक 15 वर्षीय रेखा (बदला हुआ नाम) 18 अगस्त को घर पर अकेली थी, जहा से टोकपाडा निवासी बबलू गामड़ पर जबरन अपहरण का आरोप लगाया, लड़की के पिता द्वारा 21 अगस्त को भी पेटलावद थाने पर आवेदन दे चुका है लेकिन पुलिस अब तक आरोपी को ढूढना तो ठीक अब तक मामला भी दर्ज तक नही किया, अब पीड़ित परिवार अपनी नाबालिक पुत्री की सुरक्षा को लेकर परेशान है।

मामला -3: नाबालिक लड़की गुजरात के मोरवी से गायब हुई, पुलिस ने कहा जहां से गायब हुई वहीं डालो रिपोर्ट

इसी प्रकार पेटलावद थाना क्षेत्र के गाव बावड़ी की नाबालिक लड़की गीता (बदला हुआ नाम) अपने भाई अनिल के साथ गुजरात के मोरवी में कार्य कर रहे परिवार के सदस्यों से मिलने के लिए 23 अक्टूबर को गई थी, लेकिन 27 अक्टुबर को नाबालिक लड़की का एक बर्तन फेक्ट्री में काम करने वाला युवक सामर जो कि गुजरात का ही बताया जा रहा है, अपने साथ भगा कर ले गया, लकड़ी महज 15 वर्ष की है, खाफी खोज-बिन के बाद जब लड़की नही मिली तो लड़की के भाई ने मोरवी थाने पर रिपोर्ट देकर लड़की को खोजने की गुहार लगाई, लड़की के परिजनों ने लड़के का नाम और मोबाइल नम्बर भी दिए लेकिन गुजरात पुलिस अभी तक न तो लड़की को खोज पाई न ही आरोपी को, गुजरात पुलिस का कहना है हम जांच कर रहे हैं। पीड़ित परिवार ने पेटलावद थाने पर भी गुहार लगाई लेकिन पुलिस ने साफ कह दिया कि, लड़की जहा से गायब हुई वही से कार्रवाई करना पड़ेगी, जबकि पेटलावद पुलिस को पूरा अधिकार है कि, मामले में गुजरात पुलिस से चर्चा कर लड़की की खोजबीन कर सकती थी।

नाबालिक के साथ होने वाले अपराध में 48 घंटे में दर्ज करना होता है प्रकरण

नाबालिकों के प्रति होने वाले अपराधों के मामलो में सरकार अत्यंत ही गंभीर है और ऐसे मामलों में 48 घंटे मे अपराध दर्ज करने के सख्त निर्देश थे, लेकिन स्थानीय स्तर पर ही मामले निपटाने की आड़ में पुलिस कोई कार्रवाई नही करती, ऐसे में कई बार नाबालिक लड़कियां बड़े अपराधों का शिकार हो जाती है या फिर जान भी गवा देती हैं।

जामले और निनामा विभाग छोड़कर जनपद में अटैच हो कर रहे नौकरी

अटेचमेंट समाप्त होने के बाद भी जनपद में टिके हुए है कर्मचारी

माही की गूंज, पेटलावद।

कहने को तो शासन ने अटेचमेंट की व्यवस्था समाप्त कर दी है, लेकिन शासन के आदेशों पर अफ्सरशाही इस कदर हावी है कि, कर्मचारी अपनी मन-मर्जी के अनुसार अपने विभाग छोड़कर मलाईदार विभाग में जाकर चांदी काट रहे हैं। ऐसे अटैच कर्मचारियों की शिकायत का भी अधिकारियों पर कोई प्रभाव नही पड़ता और कर्मचारी लगातार अपने आकाओं की सेवा-पानी कर अपना विभाग और मूल संस्था छोड़कर दूसरे कार्यालयों में लगे हुए है। पेटलावद जनपद कार्यालय अब कमीशन खोरी के साथ रिश्वत का अड्डा बन चुका है और कार्यो के भुगतान के बिल स्वीकृत करने के लिए वसुली व फर्जी बिलो के भुगतान की चर्चा आम है।

पेटलावद जनपद में पदस्थ दो कम्प्यूटर आपरेटर का कार्य कर रहे कर्मचारी वीरसिंह निनामा और नानूराम जामले को अपने-अपने मूल विभाग से हटाकर जनपद पंचायत पेटलावद में अटैच कर दिया, तब से लेकर अभी तक दोनों यही पदस्थ होकर कार्य कर रहे है।

एक पॉलिटेक्निक कॉलेज तो दूसरा प्रधानमंत्री सड़क विभाग का कर्मचारी

जनपद में कम्प्यूटर आपरेटर के पद पर कार्य कर रहे वीरसिंह निनामा सहायक ग्रेट वर्ग 3 का कर्मचारी होकर मूल संस्था शासकीय पॉलिटेक्निक कालेज झाबुआ में पदस्थ है लेकिन अपर कलेक्टर झाबुआ द्वारा 1 नवम्बर 2019 को आदेश जारी कर वीरसिंह निनामा को मध्यप्रदेश शासन के सामान्य प्रशासन विभाग मंत्रालय के जारी निर्देश का हवाला देकर एक वर्ष के लिए रिडिप्लीमेंट के लिए जनपद पंचायत पेटलावद में कार्य करने के लिए आदेशित कर दिया था। वीरसिंह निनामा अपनी मूल संस्था छोड़कर लगभग 4 से 5 वर्षो से जनपद पेटलावद में ही पदस्थ है और हर बार किसी न किसी तरीके से जनपद में नोकरी के लिए गोटी फिट कर लेता है। इसी प्रकार जनपद में पदस्थ एक ओर अटैच कर्मचारी नानूराम जामले भी प्रधानमंत्री सड़क विभाग झाबुआ के आपरेटर के पद पर पदस्थ है लेकिन जुगाड़ कर नानूराम जिला जनपद कार्यालय झाबुआ के 13 अक्टूबर 2014 के आदेश से जनपद पंचायत पेटलावद भेजा गया, लेकिन अटेचमेंट समाप्त होने के बाद भी जामले को अब तक मूल संस्था में नही भेजा गया।

प्रभारी मंत्री एवं कलेक्टर के बिना अनुमोदन के अटेचमेंट सम्भव नही

सामान्य प्रशासन विभाग भोपाल द्वारा 19 मई 2017 को जारी आदेश में जिला स्तर के अधिकारियों, कर्मचारियों की स्थानान्तरण नीति में परिवर्तन करते हुए जिले में पदस्थ अधिकारीयो एवं कर्मचारियों का संलग्नीकरण बिना प्रभारी मंत्री और जिला कलेक्टर के अनुमोदन के बिना नही किया जा सकेगा। आदेश में सख्त निर्देश है कि, समस्त संलग्नीकरण तत्काल प्रभाव से निरस्त कर अवगत कराया जाए अन्यथा अनुशास्त्मक कार्रवाई प्रस्तावित होगी। लेकिन विभाग के जारी आदेशो का भ्रष्टाचारी उर्फमोटी चमड़ी वाले अधिकारियों पर कोई फर्क नही पड़ता और कई विभागों में कई कर्मचारी आज भी अटेचमेंट में मनमानी जगह पर टिके हुए है। ऐसा नही की इन कर्मचारियों की शिकायत नही हुई या जवाबदारो को इसकी जानकारी नही है, सारी जानकारी अधिकारियों के पास होने के बाद भी अटैच कर्मचारियों को इनकी मूल संस्था नही भेजा जा रहा है।

जिला पंचायत सीईओ से इस सबंध में मोबाइल से चर्चा करने का प्रयास किया गया लेकिन कई बार कॉल करने के बाद भी उनका मोबाइल अटेंड नही हुआ।

रूई फैक्ट्री में लगी आग, मस्कत के बाद पाया आग पर काबू, लाखों का हुआ नुकसान

माही की गूंज, रतलाम।

जावरा पहाड़िया रोड स्थित रुई फैक्ट्री में शॉर्ट सर्किट के कारण करीब 12 बजे के करीब आग लग गई। आग बुझाने के लिए जावरा, रतलाम, पिपलौदा की दमकल की करीब 15 गाड़ीया मौके पर पहुंची। निजी पानी के टैंकर संचालकों ने भी आग बुझाने में सहयोग दिया।

पहाड़िया रोड पर मंगलवार को रुई फैक्ट्री पूरी जल गई। बिजली मोटर पर लोड बढ़ने से उठी चिंगारी के कारण आग लगी और देखते-ही-देखते पूरी फैक्ट्री को चपेट में ले लिया। वहां रखे सामान के साथ मशीनरी, टीनशेड, कॉटन के बंडल सभी राख हो गए। 5 फायटर व करीब 50 टैंकर को आग पर काबू पाने में दिनभर लग गया। फैक्ट्री मालिक का कहना है कि, लगभग 20 लाख रुपए का नुकसान हुआ। दिन के 12 बजे के करीब फैक्ट्री के अंदर मोटर के पास से धुआं उठने लगा तभी वहां काम कर रहे मजदूरों ने उसे बुझाने का प्रयास किया, घंटेभर मशक्कत के बावजूद आग पर काबू नहीं पा सके और लपटों ने रुई के सारे बंडलों को देखते ही देखते चपेट में ले लिया तो, उन्होंने नगरपालिका दमकल को सूचना दी। दो फायटर जावरा के पहुंचे, पर आग पर काबू नहीं पाया गया तो पिपलौदा के दो और रतलाम के एक फायर फायटर को बुलाना पड़ा। जब तक दमकल पहुंची तब तक आग ने पूरी फैक्ट्री को राख कर दिया था। दिनभर एक के बाद एक फायर लॉरी पानी लाकर आग बुझाने के लिए इधर-उधर दौड़ती रही। वहीं कुछ ने टैंकरों की मदद से पानी की व्यवस्था कर आग बुझाने में मदद की। जो लेबर काम कर रही थी, शुक्र है बच गए, रुई की जिनिंग फैक्ट्री में शेड का निर्माण अधिक है। आग लगने से चद्दर पूरी तरह जल गए, दमकल ने चारों तरफसे पानी की बौछार कर आग पर काबू पाया जिसमें अमले को दिनभर हो गया। जिनिंग फैक्ट्री में कॉटन वेस्ट को साफकर उसे उपयोग में लाने लायक बनाने का काम होता था। मंगलवार को 7 से 8 व्यक्तियों की लेबर काम कर रही थी। शुक्र है आग लगते ही वे सभी बाहर निकल गए, जिससे किसी तरह की जनहानि नहीं हुई।

संपादकीय

कृषि कानून को लेकर केंद्र-राज्य की सियासत

केंद्र के विवादास्पद कृषि कानूनों के समानांतर पंजाब विधानसभा ने तीन विधेयक पारित किए हैं। पंजाब में कांग्रेस की सरकार है। यही कवायद राजस्थान और छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकारें कर सकती हैं। हालांकि इस तरह प्रस्ताव या बिल पारित करना असंवैधानिक नहीं है। संविधान का अनुच्छेद 254 (2) राज्य सरकारों को विशेषाधिकार देता है कि वे समानांतर बिल पारित कर सकती हैं। बशर्ते वह विषय समवर्ती सूची का हो। हमारे संविधान निर्माताओं को ऐसे विवाद और विभाजन का पूर्वाभास था, लिहाजा उन्होंने 47 विषयों को समवर्ती सूची में डाल दिया था, लेकिन अंतिम समाधान यह नहीं है। पंजाब सरकार ने पारित बिलों में यह व्यवस्था की है कि जो भी न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से कम दाम पर किसान की फसल खरीदेगा, उसे तीन साल तक की जेल की सजा दी जा सकती है और जुर्माना अतिरिक्त होगा। फोकस किसानों पर है और उनका प्रथम हमदर्द बनने की होड़ मची है। खरीफ की फसलें मंडियों में बिक रही हैं। यदि उन मंडियों का अध्ययन किया जाए, तो एक औसत यथार्थ सामने आया है कि करीब 30 फीसदी फसलें ही एमएसपी पर या उससे अधिक दामों पर बिकी हैं।

शेष 70 फीसदी फसलों के हिस्से एमएसपी नसीब नहीं हुआ है। बेशक प्रतीकात्मक जीत पंजाब की कैप्टन अमरिंदर सिंह सरकार की दिख रही है, लेकिन पारित विधेयक फिलहाल बेमानी हैं। बिलों में किए गए दावे भी छिछले और सतही हैं कि किसानों को कॉरपोरेट घरानों और निजी बड़े व्यापारियों से बचाने के मद्देनजर बिल लाए गए हैं। यह बुनियादी तौर पर गलत प्रचार है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि बीते वर्ष 90-95 फीसदी गेहूं और अधिकतर गैर-बासमती धान की खरीद सरकारी एजेंसियों ने ही की थी। निजी खरीददार पंजाब और हरियाणा की मंडियों से फसल खरीद करना ही नहीं चाहते, क्योंकि मंडियों की फीस और अनाप-शनाप उपकर देने पड़ते हैं। लिहाजा कमोबेश पंजाब का किसान तो इस मामले में सुरक्षित है, क्योंकि सरकारी खरीद एमएसपी अथवा ज्यादा दामों पर ही की जाती है। बहरहाल बिलों की स्थिति अभी यह है कि उन पर राज्यपाल की सहमति और अंततः राष्ट्रपति की हस्ताक्षरयुक्त स्वीकृति अनिवार्य है। उसके बाद ही कानून का रूप धारण कर सकेंगे। केंद्रीय कानूनों को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद स्वीकृति दे चुके हैं और उन कानूनों को अधिसूचित भी किया जा चुका है। बेशक उन कानूनों में एमएसपी को कानूनी अधिकार नहीं बनाया गया है, अलबत्ता केंद्र सरकार ने आश्वस्त किया है कि किसानों की फसलें एमएसपी पर या उससे ज्यादा तय दामों पर खरीदनी होंगी। ऐसी सहमति न बनने पर किसान देशभर में कहीं भी फसल बेचने को स्वतंत्र है। औसत किसान की यही मजबूरी है। वह साधन-संपन्न नहीं है। वह इंटरनेट, ऑनलाइन मार्केटिंग की भाषा नहीं जानता। पूरा विश्व उसका बाजार नहीं हो सकता। उसे यथाशीघ्र फसल की कीमत चाहिए, क्योंकि कर्ज और खर्च के बोझ उस पर पहले से ही सवार होते हैं।

कर्ज के कारण वह मंडी के आढ़तियों से भी बंधा होता है। हमारा किसान व्यापारिक मानस का भी नहीं है, लिहाजा शुरू से ही बहस का केंद्र यही रहा है कि केंद्र सरकार एमएसपी को अनिवार्य कानूनी वैधता दे, ताकि उससे कम दामों पर फसलों की खरीददारी ही संभव न हो सके। न जाने क्यों मोदी सरकार इसे टालती रही है? दूसरी तरफ पंजाब से जो कोशिश की गई है, वह भरपूर और एक छिछली सियासत है। ऐसी लोकलुभावन राजनीति किसानों का भविष्य संवार नहीं सकती। यह एक बड़े व्यापार का तकनीकी मामला है कि फसलें एमएसपी से कम दाम पर न बिकें, लेकिन इसी मौसम में किसान शिकायतें कर रहे हैं कि मक्का और कच्ची कपास एमएसपी से बहुत कम दाम पर बेचनी पड़ रही हैं। किसान ने लाखों हेक्टेयर में इस साल ये फसलें बोई हैं। बासमती धान भी बड़े स्तर पर बोया गया है। उसका तो एमएसपी कागज पर भी सरकार ने तय नहीं कर रखा है। ऐसे हालात में पंजाब सरकार क्या कर सकती है? एमएसपी से कम दामों पर फसलें बेचनी पड़ रही हैं, इस पर सरकार क्या कहना चाहेगी? मुख्यमंत्री कैप्टन अच्छी तरह जानते हैं कि पहले तो राज्यपाल ही सहमति नहीं देंगे। यदि पारित विधेयक राष्ट्रपति तक भेजे जाते हैं, तो वह उन पर हस्ताक्षर क्यों करेंगे? वह पहले ही संसद द्वारा पारित बिलों पर हस्ताक्षर कर उन्हें कानून बनाने की सहमति दे चुके हैं। उस संवैधानिक स्तर पर दोगला व्यवहार संभव नहीं है। पंजाब सरकार के लिए सर्वोच्च न्यायालय का रास्ता भी बेहद संकरा है, लिहाजा बिलों की नियति समझी जा सकती है।

जनभावनाओं से खेलने की साजिश

मथुरा के नंद महल मंदिर में दो मुस्लिमों ने नमाज पढ़कर हिंदू संगठनों को उद्वेलित कर दिया है। उनकी इस बात में दम हो सकता है कि श्रीकृष्ण हिंदुओं के ही नहीं, मुसलमानों के भी हैं लेकिन क्या सभी मुसलमान उनके इस दावे से इत्तेफाक रखते हैं। अगर ऐसा है कि श्रीकृष्ण मुसलमानों के भी अभीष्ट हैं तो श्रीकृष्णजन्मभूमि परिसर में शाही मस्जिद का औचित्य क्या है? अगर नमाज अदा कर भी ली तो उसे सोशल मीडिया पर वायरल क्यों किया, क्या इसके पीछे कोई साजिश थी।

इसमें संदेह नहीं कि संप्रति अयोध्या और मथुरा दोनों चर्चा के केंद्र में हैं। अयोध्या में सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के उपरांत भव्य मंदिर निर्माण के लिए ट्रस्ट का गठन हो गया है। वहां मंदिर निर्माण की प्रक्रिया भी तेज हो गई है। इससे उत्साहित कुछ लोगों ने अपने को भगवान श्रीकृष्ण का मित्र बताते हुए वहां की स्थानीय अदालत में मुकदमा दायर कर दिया है। याचिका में अदालत से अपील की गई है कि वह श्रीकृष्ण जन्मभूमि परिसर से शाही मस्जिद को हटाने का निर्देश दे। हालांकि याचिका का कुछ मुस्लिम संगठनों और उनके नेताओं ने विरोध भी किया है और इसे देश के सांस्कृतिक ताने-बाने को कमजोर करने की कोशिश करार दिया। यह मामला अभी ठंडा भी नहीं हुआ कि कुछ लोगों ने मथुरा के नंद बाबा मंदिर में नमाज कर हिंदू समाज को उद्वेलित कर दिया है। हिंदू समाज के कुछ लोगों का कहना है कि जब मस्जिदों और मजारों में रामायण-गीता का पाठ नहीं हो सकता। वहां मंत्रोच्चार के साथ हवन-यज्ञ नहीं किए जा सकते तो नंदबाबा के मंदिर में नमाज पढ़ना किस तरह जायज है? जब मंदिर में नमाज पढ़ने की इजाजत इस्लामिक ग्रंथ और विद्वान भी नहीं देते तो फिर नंदगांव के नंदबाबा मंदिर में नमाज क्यों पढ़ी गई?

अयोध्या मामले की सुनवाई के क्रम में वर्ष 1994 में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि नमाज कहीं भी पढ़ी जा

सकती है और इसके लिए मस्जिद अहम नहीं है लेकिन पैगंबर हजरत मोहम्मद इसकी इजाजत नहीं देते। वे उस जगह नमाज पढ़ने से मना करते हैं, जहां घंटियां बजती हैं। यह बात रामजन्मभूमि विवाद में सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई में भी कही गई है। कई मौलाना भी ऐसा मानते हैं कि जिस जगह पर कोई मूर्ति रखी हो, कोई चित्र टंगा या उकेरा गया हो, वहां नमाज जायज नहीं है तो क्या मुस्लिम यात्री और दिल्ली की खुदाई खिदमतगार संस्था के सदस्य फैसल खान व मोहम्मद चांद ने मंदिर में नमाज अदा कर इस्लाम और इस्लामिक विद्वानों की राय को भी अनदेखा किया है?

सवाल यह है कि वहां के पुजारी ने उन्हें ऐसा क्यों करने दिया? उसकी सहमति के बिना तो ऐसा कर पाना मुमकिन नहीं है। हिंदू संगठनों के आक्रोश के बाद मंदिर प्रशासन भी सकते में आ गया है और उनपर धोखे से मंदिर में नमाज अदा करने और वीडियो वायरल करने का आरोप लगाया है। दो सेवायतों की शिकायत पर पुलिस ने चार लोगों खुदाई खिदमतगार संस्था के सदस्य फैसल खान व मोहम्मद चांद, आलोक रतन और नीलेश गुप्ता के खिलाफमुकदमा दर्ज कर लिया है। सेवायतों ने यह भी आशंका जाहिर की है कि नमाज अदा करने वाले युवकों के संबंध विदेशी संगठनों से हो सकते हैं। उन्होंने इस बावत विदेशी फंडिंग की जांच की भी मांग की है। इसके विपरीत कौमी एकता मंच के मधुवन दत्त चमक चतुर्वेदी का कहना है कि सामाजिक सौहार्द को देखते हुए ही उन्हें मंदिर में नमाज पढ़ने की अनुमति दी गई थी। अगर ऐसा था तो मंदिर प्रशासन झूठ क्यों बोल रहा है?

सियाराम पांडेय 'शांत'

अखिल भारतीय तीर्थ पुरोहित महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महेश पाठक ने इस घटना को तूल न देने का आग्रह किया है। उन्होंने बजरंगियों से ऐसे तत्वों से सतर्क रहने की अपील की है। उन्होंने कहा है कि यदि नमाज का समय होने के कारण मन्दिर के एक कोने में सुनसान जगह पर उन्होंने नमाज अदा कर दी थी तो भी उन्हें छोड़ा जा सकता था लेकिन उसकी फोटो खींचकर सोशल मीडिया में डालने से यह स्पष्ट है कि वे यहां के माहौल को खराब करने के लिए आए थे। कृष्ण जन्मभूमि और शाही मस्जिद, ईदगाह का मामला उठाकर पहले ही यहां के वातावरण को खराब करने का प्रयास किया गया है। उसपर भी इस प्रकार के तत्व यदि साम्प्रदायिक सौहार्द को बिगाड़ने का प्रयास करें तो कानून को ऐसे लोगों को बख्शना नहीं चाहिए।

चूंकि फैसल खान और उनके साथी साइकिल से बज की चौरासी कोसी परिक्रमा कर रहे हैं, इससे इतना तो तय है कि कृष्ण के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा है लेकिन उनके कृत्य की किसी भी रूप में सराहना नहीं की जा सकती। इस तरह के आचरण से देश में सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को चोट पहुंच सकती है। धर्मगुरुओं को अपने-अपने मतावलंबियों को इस बावत उचित निर्देश देने चाहिए, जिससे देश में अशांति और वैमनस्य की भावना विकसित न हो। जनभावनाओं से खेलने का अधिकार किसी को नहीं है।

मंदिर में नामज?

मथुरा के एक मंदिर में नमाज पढ़ने के अपराध में पुलिस चार नौजवानों को गिरफ्तार करने में जुटी हुई है। उन चार में से दो मुसलमान हैं और दो हिंदू हैं। ये चारों नौजवान दिल्ली की खुदाई-खिदमतगार संस्था के सदस्य हैं। इस नाम की संस्था आजादी के पहले सीमांत गांधी बादशाह खान ने स्वराज्य लाने के लिए स्थापित की थी। अब इस संस्था को दिल्ली का गांधी शांति प्रतिष्ठान और नेशनल एलायंस फॉर पीपल्स मूवमेंट चलाते हैं।

इस संस्था के प्रमुख फैजल खान को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है और उसके तीन अन्य साथी अभी फरार हैं। इन चारों नौजवानों के खिलाफ मंदिर के पुजारियों ने पुलिस में यह रपट लिखवाई है कि इन लोगों ने उनसे पूछे बिना मंदिर के प्रांगण में नमाज पढ़ी और उसके फोटो इंटरनेट पर प्रसारित कर दिए। इसका उद्देश्य हिंदुओं की भावना को ठेस पहुंचाना और देश में साम्प्रदायिक तनाव पैदा करना रहा है।

इन चारों नवयुवकों का कहना है कि दोपहर को वे जब मंदिर में थे, नमाज का वक्त होने लगा तो उन्होंने पुजारियों से अनुमति लेकर नमाज पढ़ ली थी। उस समय वहां कोई भीड़-भाड़ भी नहीं थी। मेरी समझ में नहीं आता कि इन लड़कों को पुलिस ने गिरफ्तार क्यों किया ? उन्होंने मूर्तियों के सामने जाकर तो नमाज नहीं पढ़ी? उन्होंने हिंदू देवताओं के लिए कोई अपमानजनक शब्द नहीं कहे। यदि उन्हें अनुमति नहीं मिली तो उन्होंने नमाज कैसे पढ़ ली ? क्या पुजारी लोग उस वक्त खर्राटे खींच रहे थे ?

सबसे बड़ी बात तो यह कि जिस फैसल खान को गिरफ्तार किया गया है, वह रामचरित मानस की चौपाइयां धाराप्रवाह गा कर सुना रहा था। चारों नौजवान मथुरा-वृंदावन किसलिए गए थे ? चौरासी कोस की ब्रज-परिक्रमा करने गए थे। ऐसे मुसलमान युवकों पर आप हिंदूद्रोह का आरोप लगाएंगे तो अमीर खुसरो, रसखान, ताजबीबी, आलम और नजीर जैसे कृष्णभक्तों को आप क्या फांसी पर लटकाना चाहेंगे? कृष्ण के घुंघराले बालों के बारे में देखिए ताजबीबी ने क्या कहा है-

लाम के मानिंद हैं, गेसू मेरे घनश्याम के।

काफिर है, वे जो बंदे नहीं इस लाम के।।

यदि आप सच्चे हिंदू हैं, सच्चे मुसलमान हैं और सच्चे ईसाई हैं तो आप सबका भगवान क्या एक नहीं है ? भगवान ने आपको बनाया है या आपने कई भगवानों को बनाया है ?

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

मंदिर में बैठकर कोई मुसलमान अरबी भाषा में वही प्रार्थना कर रहा है, जो हम संस्कृत में करते हैं तो इसमें कौनसा अपराध हो गया है ? मैंने लंदन के एक गिरजे में अब से 51 साल पहले आरएसएस की शाखा लगते हुए देखी है।

एक बार न्यूयार्क में कई पठान उद्योगपतियों ने मेरे साथ मिलकर हवन में आहुतियां दी थीं। बगदाद के पीर गैलानी की दरगाह में बैठकर मैंने वेदमंत्रों का पाठ किया है और 1983 में पेशावर की बड़ी मस्जिद में नमाजे-तरावी पढ़ते हुए बुरहानुद्दीन रब्बानी (जो बाद में अफगान राष्ट्रपति बने) ने मुझे अपने साथ बिठाकर 'संध्या' करने दी थी। लंदन के 'साइनेगॉग' (यहूदी मंदिर) में भी सभी यहूदियों ने मेरा स्वागत किया था। किसी ने जाकर थाने में मेरे खिलाफ रपट नहीं लिखवाई थी।

चाणक्य नीति

उस यज्ञ के समान कोई शत्रु नहीं जिसके उपरांत लोगो को बड़े पैमाने पर भोजन ना कराया जाए। ऐसा यज्ञ राज्यों को खतम कर देता है। यदि पुरोहित यज्ञ में ठीक से उच्चारण ना करे तो यज्ञ उसे खतम कर देता है। और यदि यजमान लोगो को दान एवं भेटवस्तू ना दे तो वह भी यज्ञ द्वारा खतम हो जाता है।

बस तू चलना मत छोड़ना

कोई भी इंसान अकेला नहीं है, जो मानता है कि मैं अकेला हूं। कोई भी अलग नहीं है सब एक ही है। सब जुड़े हुए ही है। बस अंतर शरीर में, आकार में, काम में और सौच में है और सबसे ज्यादा असर हमारी सोच में होता है । जो जैसा सोचता है वैसा वो बन रहा होता है।

काम की बात

असंभव समझे जाने वाला कार्य संभव करके दिखाएं, उसे ही प्रतिभा कहते है।

एक सलाह

लोग बहुत अच्छे होते है, अगर हमारा वक्त अच्छा हो तो ।

समाचार पत्र: आज भी विश्वसनीय

कुछ साल पहले 'मैच फिक्सिंग' शब्द काफी चर्चा में रहा था। हाल में टीआरपी को लेकर जिस तरह एकाएक कई सच उजागर हुए उसके बाद मानना पड़ेगा कि टीवी देखने वाले आँखों देखी ठगी का शिकार होते हैं। यहां मैच फिक्सिंग भी और टीआरपी फिक्सिंग भी। ऐसे शिकारों का दर्द भी दोहरा होता है। एक तो पैसे देकर अपने मुताबिक प्रोग्राम की सूची बनवाते हैं, दूसरा इन्हें देखते हुए कब ठगी, झूठ का शिकार हो जाते हैं पता नहीं चलता।

देश की आबादी लगभग 136 करोड़ है, वहीं कुल टीवी सेट्स की संख्या 20 करोड़ और दिखने वाले विभिन्न भाषाई चैनलों की संख्या 900 के लगभग है। स्वाभाविक है चैनलों की आपसी होड़ नियम, नियमावली और करार से ज्यादा विज्ञापनों पर केन्द्रित होती है। विज्ञापन के लिए लोकप्रियता का पैमाना तय करने के लिए तकनीकी रूप से टीआरपी यानी टेलीविजन रेटिंग प्वाइण्टस पर एक उपकरण फिक्स होता है जो वहाँ देखे जा रहे चैनल, कार्यक्रम आदि का डेटा कलेक्ट कर साप्ताहिक रेटिंग जारी करते हैं। यह चैनलों की लोकप्रियता का क्रम बताता है।

सुशान्त मामले पर सुर्खियाँ बटोरने और टीआरपी में बने रहने की होड़ में कई खबरिया चैनलों ने कंटेन्ट की प्रमाणिकता और विश्वनीयता की बची-खुची आत्मा को ही मार दिया। चौबीसों घण्टे, सातों दिन हफ्तों चले इंसाफ की दुहाई में विश्व में दूसरे क्रम की जनसंख्या वाले देश में तमाम मुद्दे गौण हो गए। कोरोना तक पीछे हो गया। आरोपी, फरियादी, वकील और जज की भूमिका निभाते चैनलों की चीख-चिल्लाहट के बीच आज सुशान्त का मामला वहीं दिख रहा है जहां देश के तमाम इस तरह के मामले हैं।

दरअसल, टीवी कार्यक्रमों की गुणवत्ता पर उंगलियाँ तो काफी पहले से उठ रही थीं लेकिन हाल के टीआरपी घोटाले के बाद यह साफ हो गया है कि यहाँ भी खेल फिक्सिंग का है। टीआरपी घोटाला एकाएक सामने आया और लोगों में चैनलों के प्रति गुस्सा भी दिखा। फिक्सिंग का खेल यहाँ भी चल रहा था। चैनलों में प्रसारित होने वाली सामग्रियाँ जनसरोकारों से दूर होती जा रही हैं। विज्ञापन बटोरने के लिए काला-पीला करने वाला फिक्सिंग का खेल यहाँ भी खेला जा रहा था। कुल 40 हजार घरों में फिक्स टेलीविजन रेटिंग प्वाइण्ट्स बैरोमीटर लगे थे। यूँ तो ये गुप्त होते हैं लेकिन सच यह निकला कि तय घरों में तय चैनलों को देखने के लिए फिक्स थे। खुलासा मुंबई में हुआ जिसपर भी खूब हो हल्ला मचा और टीआरपी के हमाम में आरोपित पा संदेही चैनलों ने भी एक-दूसरे की इज्जत तार-तार करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी।

चैनलों की विश्वसनीयता को लेकर गंभीर सवाल उठने लगे। बीते महीने आईएएनएस और सी वोटर मीडिया ट्रैकर सर्वे से पता चला कि 63.1: लोगों ने माना कि कोरोना के बाद पाठकों के लिए समाचार-पत्र अधिक भरोसेमंद हो गए। जबकि 31.2: इससे असहमत थे। वहीं 75.5: ने कहा कि समाचार-पत्रों में समाचार और घटनाक्रम सही ढंग से दिए जाते हैं जबकि 12.5: ऐसा नहीं मानते हैं। सर्वे में 72.90: लोगों ने माना कि टीवी न्यूज चैनलों की बहस से ज्यादा अच्छी जानकारी समाचार-पत्रों से मिलती है। वहीं 21.50: इससे असहमत थे। इसी तरह 65: लोगों ने माना कि समाचार-पत्रों के विज्ञापन ज्यादा उपयोगी होते हैं। वहीं 76.5: लोगों का मानना था कि वे टीवी चैनलों के विज्ञापन से चीजें नहीं खरीदते हैं जबकि 18.5: ने इससे असहमति जताई।

निश्चित रूप से आज भी प्रिन्ट मीडिया की साख और धाक को कोई चुनौती नहीं है। इसकी वजह साफ है कि यह एक दस्तावेज के रूप में सहेजे जा सकते हैं और कटिंग का चयन बेहद संजीदगी व सावधानी से किया जाता है। टीवी कार्यक्रम बार-बार न तो रिपीट होते हैं और न ही इन्हें नियमित रूप से सहेज पाना हर किसी के बस में है। शायद यही कारण है कि टीवी चाहे वह मनोरंजन चैनल हों या खबरिया महज एक अलग नजरिए से देखे और भुला दिए जाते हैं।

भारत में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों जिनमें दैनिक, पाक्षिक एवं साप्ताहिक भी शामिल हैं, उनकी संख्या लगभग 1 लाख 15 हजार है। जिनमें 98 हजार के लगभग पत्र-पत्रिकाओं की श्रेणी के हैं। वहीं इनके प्रसार के दावों को देखा जाए तो यह 50 करोड़ के आसपास पहुँचता है। समझा जा सकता है कि पहुँच, प्रभाव और प्रसार की दृष्टि से भी समाचार पत्रों की होड़ टीवी चैनलों से नहीं हो सकती। टीआरपी का असली-नकली खेल कुछ भी हो, पत्र-पत्रिकाओं की साख और विश्वनीयता से टीवी चैनलों तुलना ठीक नहीं। शायद इसीलिए सर्वे में भी यही सच सामने आया है।

ऋतुपर्ण दवे

क्या टीवी चैनल इतना सच व सबकुछ जानने के बाद भी अक्सर अपने चौंका देने वाले तेवरों और तेज आवाज में भड़काऊ तर्ज पर चीखने-चिल्लाने वाली अदाओं से समाचार-पत्र, पत्रिकाओं की तुलना में काफी पीछे होकर भी आगे होने का भरम तोड़ पाएंगे? दर्शक हों या पाठक उन्हें परोसे जाने वाली सामग्री की विश्वनीयता और उससे भी बढ़कर नैतिकता की कसौटी पर कब खरे उतरेंगे? काश संप्रेषण के सारे माध्यम इसी जनभावना को समझते ताकि विश्व गुरू बनने को अग्रसर भारत का सूचना जगत भी अपनी जिम्मेदारी को गुरुतर भावना से निभा पाता।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

नियुक्तियों में केंद्र की मनमानी

शक्तियों का कैसे दुरुपयोग किया जा सकता है कि इसकी मिसाल देने में मौजूदा केंद्र सरकार कभी बाज नहीं आती। उसने हाल में फिर ऐसा ही किया। इससे सिविल सोसायटी में नाराजगी और व्यग्रता है, लेकिन उसका कोई असर होना नहीं है। उससे सिर्फयह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गुजरे दशकों में लंबे जन संघर्ष से व्यवस्था में अवरोध और संतुलन के जो उपाय हासिल किए गए थे, वो अब हर व्यावहारिक रूप में खो चुके हैं। ताजा मिसाल सूचना आयोग में नई नियुक्तियों के सिलसिले में मिली। विदेश सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी यशवर्धन कुमार सिंह को प्रमुख सूचना आयुक्त (सीआईसी) और पत्रकार उदय माहुरकर को सूचना आयुक्त नियुक्त किया गया। विवाद इसलिए खड़ा हुआ क्योंकि आयुक्तों को चुनने के लिए बने पैनल के सदस्य कांग्रेस सांसद अधीर रंजन चौधरी ने जानकारी दी कि ये नियुक्तियां उनके विरोध के बावजूद हुई हैं। अधीर रंजन चौधरी लोकसभा में कांग्रेस संसदीय दल के नेता हैं। मीडिया में आई खबरों के अनुसार चौधरी ने आपत्ति जताई कि सबसे पहले तो चयन समिति ने 139 आवेदकों में से सात को शार्ट लिस्ट करने का कोई भी आधार नहीं बताया। उसके बाद एक ऐसे व्यक्ति को सीआईसी बनाया गया जिसे देश के अंदर सेवाएं उपलब्ध कराने, कानून, विज्ञान, मानवाधिकार और दूसरे जन-सरोकार के विषयों का कोई जमीनी तजुर्बा नहीं है।

यशवर्धन कुमार सिंह 1981 बैच के आईएएस अधिकारी हैं। अपनी 35 सालों की राजनयिक सेवा में वो श्रीलंका और ब्रिटेन में भारत के राजदूत रह चुके हैं और कई और विदेशी दूतावासों में अहम पदों पर काम कर चुके हैं। उन्हें जनवरी 2019 में केंद्रीय सूचना आयुक्त बनाया गया था। चौधरी के अनुसार सिंह सीआईसी के पद के लिए इस कारण से भी योग्य नहीं थे, क्योंकि सूचना आयुक्त बनजा सरना उनसे वरिष्ठ हैं और पद के लिए बेहतर योग्यता रखते हैं। वैसे सबसे बड़ा विवाद माहुरकर के नाम को लेकर उठा है। इंडिया टुडे समूह के साथ काम करने वाले माहुरकर को केंद्र में सत्तारूढ़ बीजेपी के मुखर समर्थक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपलब्धियों पर एक किताब भी लिखी है। उनकी नियुक्ति का मामला सबसे विवादास्पद इसलिए भी है, क्योंकि चौधरी के अनुसार माहुरकर का नाम आवेदकों की सूची में था ही नहीं। मगर केंद्र ने इस बातों की कोई परवाह नहीं की। इसे मनमानी की मिसाल ही कहा जाएगा।

वामपंथ व दक्षिणपंथ में सुविचारित विभाजन नहीं

भारतीय राजनीति लोकमंगल का उपकरण है। सभी दल अपनी विचारधारा को देशहित का साधन बताते हैं। विचार आधारित राजनीति मतदाता के लिए सुविधाजनक होती है। भिन्न-भिन्न दल अपनी विचारधारा के आधार पर कार्यकर्ता गढ़ते हैं और कार्यकर्ताओं के माध्यम से लोकमत बनाते हैं। यह एक आदर्श स्थिति है लेकिन भारतीय राजनीति में मार्क्सवादी दल व राष्ट्रवादी भाजपा ही कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करते हैं। वे विचार आधारित लोकमत बनाने का काम करते हैं।

देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस स्वतंत्रता पूर्व विचार आधारित कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर चलाती थी। राष्ट्रवाद उसका विचार था। बहुत पहले समाजवादी दल भी विचार आधारित प्रशिक्षण देते थे। धीरे-धीरे विचार आधारित राजनीति घटी। जाति, पंथ और मजहब राजनीति के उपकरण बने। अब मार्क्सवादी और भाजपा ही अपने कार्यकर्ताओं को विचार आधारित प्रशिक्षण देने वाली पार्टियाँ बची हैं। सामान्य बोलचाल में भारतीय जनता पार्टी को दक्षिणपंथी व मार्क्सवादी समूहों को वामपंथी कहा जाता है। लेकिन वामपंथ और दक्षिणपंथ सुविचारित और व्यवस्थित विभाजन नहीं है।

दक्षिणपंथ और वामपंथ दलअसल एक सांयोगिक घटना का परिणाम है। सन् 1797 में फ्रांस की क्रांति के समय नेशनल असेम्बली दो भागों में बंट गयी थी। सम्राट लुई-16 ने बैठक बुलाई। फ्रांसीसी संसद में परम्परागत राजव्यवस्था को हटाकर लोकतंत्र लाने वाले व रूढ़ियों को न मानने वाले बाईं तरफ बैठे थे। परम्परा और रूढ़ि के आग्रही दाये बैठे। यह सुविचारित और व्यवस्थित विभाजन नहीं था।

मोटे तौर पर वामपंथ का विकास कार्ल मार्क्स के व्यवस्थित विचार से हुआ था। माना जाता है कि यह राजशाही और पूँजीवादी तंत्र के शासन के विरुद्ध प्रतिक्रियात्मक विचारधारा है। इस विचारधारा में सामाजिक वर्गों की कल्पना की गयी है। वर्ग संघर्ष को विकास का आधार बताया गया है। सर्वहारा की तानाशाही मार्क्सवाद की दृष्टि में आदर्श राजव्यवस्था है। ऐसी समाज व्यवस्था के लिए हिंसा को भी उचित ठहराया गया है। वे लोकतंत्र नहीं मानते। भारत के माओवादी रक्तपात करते हैं। 20 वीं सदी में चीन में माउत्से तुंग ने लाखों लोगों को मौत के घाट उतारा था। रूस में लेनिन और जोसेफ स्टालिन ने भी वामपंथ के आधार पर भारी नरसंहार किये थे। यह फ्रांस की राजक्रांति के बाद की बात है।

वामपंथ दक्षिणपंथ की कोई सुव्यवस्थित परिभाषा नहीं है। माना जाता है कि दक्षिणपंथी समाज की ऐतिहासिकता भाषा परम्परा और सांस्कृतिक विशिष्टता के आधार पर आदर्श समाज गढ़ने का प्रयास करते हैं। ऐसे समाज में वर्गीकरण या श्रेणीकरण नहीं होता। वामपंथी शोषण मुक्त समाज का दावा करते हैं।

फ्रांस की राजक्रांति के समय की परिभाषा आधुनिक राजनीति में लागू नहीं होती। इस परिभाषा के अधीन भारत की कांग्रेस और भाजपा जैसी पार्टियाँ दक्षिणपंथी कही जाती हैं। कांग्रेस और भाजपा दोनों के शासन में गरीबों के कल्याण की तमाम योजनाएँ चलती रही। स्वयं पंडित जवाहर लाल नेहरू वामपंथी रुझान के वरिष्ठ नेता थे। इंदिरा गांधी ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया था। क्या कांग्रेस को दक्षिणपंथी कहा जा सकता था। वह वामपंथी इसलिए नहीं है कि उसका चरित्र स्वाधीनता संग्राम के समय से ही राष्ट्रवादी है।

भारतीय जनता पार्टी घोषित राष्ट्रवादी है। समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान और विकास के लिए संकल्पबद्ध है। गरीब महिलाओं को निःशुल्क गैस कनेक्शन देना और बिजली कनेक्शन भी पहुंचाना दक्षिणपंथी कैसे हो सकता है? गरीबों के समर्थन में किये जा रहे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्य राष्ट्र सर्वपारिता से जुड़े हैं। इनमें गरीब कल्याण की भी सर्वोपारिता है। क्या इन्हें वामपंथी कहा जा सकता है? दक्षिणपंथ और वामपंथ का विभाजन ही अपने आप में गलत है।

इंग्लैण्ड में लेबर पार्टी व कन्जरवेटिव पार्टी प्रमुख दल है। लेबर को वामपंथी और कन्जरवेटिव पार्टी को दक्षिणपंथी कहा जाता है लेकिन दोनों पार्टियाँ अपने काम में अपने-अपने ढंग से गरीब समर्थक हैं। परिवर्तनवादी भी हैं। केवल परिवर्तनवादी विचार ही वामपंथ नहीं है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समाज व्यवस्थाएं आदर्श नहीं होती। इसी तरह राजव्यवस्था या राजनैतिक विचारधाराएं भी आदर्श नहीं होती। समाज, राजनीति और राजव्यवस्थाओं में संशोधन की गुंजाइश हमेशा बनी रहती है। सोद्देश्य परिवर्तन सबकी इच्छा होती है। दुनिया की सभी सरकारें सोद्देश्य परिवर्तन के लिए प्रयास करती हैं। जड़ता पंथ-मजहब आधारित राजनीति में है। वह अपने प्रत्येक कर्म, विचार व ध्येय को मध्यकालीन पंथिक आग्रहों से जोड़ती है। वह आधुनिकता की भी विरोधी है। उनकी राजनीति के कारण सारी दुनिया में रक्तपात है। उनके संगठन सामाजिक परिवर्तन का उद्देश्य नहीं मानते। वे मध्यकाल की वापसी चाहते हैं। वे मजहबी धारणाओं के अलावा कोई भी विचार स्वीकार नहीं करते। युद्ध करते हैं। निर्दोशों का रक्तपात भी करते हैं। आतंकवाद ऐसी ही राजनैतिक विचारधारा का विस्तार है।

दक्षिणपंथ वामपंथ काल वाह्य धारणाएं हैं। व्यर्थ हैं। सोद्देश्य सामाजिक परिवर्तन के लिए सबको काम करना चाहिए। सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध भी संघर्ष की आवश्यकता है। मैं अनेक समाचार पत्रों में लिखता हूँ। हमारे लेखन की प्रशंसा और आलोचना होती है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के पत्रकार मित्रों ने मेरे लेखन की प्रशंसा करते हुए कहा कि दक्षिणपंथी खेमे में आप सर्वाधिक प्रतिष्ठित लिखते हैं। यद्यपि यह मेरे लेखन की प्रशंसा थी, लेकिन मुझे दक्षिणपंथी कहा गया। मैंने उन्हें बताया कि हमारे लेखन में जातिभेद, वर्गभेद और रूढ़ियों पर आक्रमकता रहती है। मैं वर्तमान समाज व्यवस्था में परिवर्तन के लिए कर्म और लेखन के माध्यम से संघर्षरत हूँ। बावजूद इसके मैं दक्षिणपंथी क्यों हुआ? मित्रों ने हंसते हुए कहा कि क्या फिर आप वामपंथी हैं। मैंने कहा 'मैं वामपंथी नहीं हो सकता। वामपंथी मान्यताओं में हिंसा है। वे भारतीय सांस्कृति और परम्परा को लेकर भी आक्रामक हैं।' मित्रों ने कहा कि आप वामपंथी नहीं हैं और दक्षिणपंथी भी नहीं हैं तो फिर आप हैं क्या? मैंने पूछा क्या किसी राजनैतिक सामाजिक कार्यकर्ता का दक्षिण या वामपंथी होना जरूरी है? क्या तीसरा विकल्प नहीं है।

हृदयनारायण दीक्षित

मैंने स्वयं उत्तर दिया कि न बांये चलना, न दायें चलना, सीधे गति करना आगे बढ़ना, लोगों को आगे बढ़ने में सहायता करना यही मार्ग भारतीय परम्परा में सर्वमान्य रहा है। यह परिवर्तनकामी भी है। महाभारत की कथा में यक्ष ने युधिष्ठिर से यही पूछा था 'मार्ग क्या है- कः पंथा।' युधिष्ठिर ने बहुत सोच-समझकर उत्तर दिया- 'वेद वचन भिन्न-भिन्न हैं। ऋषि अनेक हैं। तर्क से कोई बात नहीं बनती। धर्म तत्व छुपा हुआ है, इसलिए महापुरुषों द्वारा अपनाया गया पंथ ही श्रेष्ठ है। युधिष्ठिर के उत्तर में वामपंथ या दक्षिणपंथ नहीं है। पूर्वजों ने अपने अनुभव के आधार पर जो मार्ग चुना है वही हमारा मार्ग है। क्या यह कथन पुराना होने के कारण दक्षिणपंथी है। इस कथन में आगे बढ़ने का संकल्प है। ऋग्वेद के ऋषि ने भी गतिशील रहने के लिए प्रार्थना की थी, ''संगच्छध्वं संवदध्वं सं वोमनासि जानताम्'' हम साथ-साथ चलें। साथ-साथ वार्तालाप करते चलें। साथ-साथ मन मिलाकर चलें। ऐसा ही हमारे पूर्वज करते आये हैं। परस्पर विचार-विमर्श करते हुए प्रस्थान। चरैवेति।

(लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष हैं।)

करवा चौथः आधुनिकता के बीच संस्कृति का सम्मान

भारतीय महिलाएं प्राचीनकाल से पति व संतानों के लिए अनेकों व्रत और पूजा-पाट करती रही हैं। आधुनिक युग में भी जब स्त्रियां जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं, अपनी संस्कृति और परंपराओं का भी वे उसी प्रकार भली-भांति निर्वाहन कर रही हैं। यही भारतीय नारियों की विशेषता है कि वे आधुनिक और वैज्ञानिक होते हुए भी अपनी संस्कृति का भी आदर करना नहीं भूलतीं। विभिन्न क्षेत्रों में बड़े-बड़े पदों पर आसीन उच्च शिक्षित एवं प्रतिष्ठित महिलाएं भी पति के लिए करवा चौथ आदि व्रतों का पालन करती हैं और शाम को श्रद्धापूर्वक विधि-विधान से पूजा व चंद्रमा का दर्शन कर जलग्रहण करती हैं।

बदलते परिवेश में जब पाश्चात्य संस्कृति ने भारतीय सभ्यता को बहुत अधिक प्रभावित किया है तो ऐसी महिलाएं भी हैं जो ऐसे व्रतों और पूजा-पाठ को अब नकारने लगी हैं। उनका तर्क है कि यदि पती पति के लिए व्रत और पूजा-पाट करे तो पुरुषों का भी कर्तव्य है कि वह अपनी पत्नी के लिए व्रत रहें और पूजा करें क्योंकि पति और पत्नी का रिश्ता समानता का है। अतः या तो दोनों एक-दूसरे के लिए व्रत और पूजा-पाठ करें अन्यथा कोई न करे। तार्किक बुद्धि वाले स्त्री-पुरुष ऐसे व्रतों और पूजा-पाठ को पिछड़ेपन और अज्ञानता की निशानियां मानते हैं। उनका मानना है कि आज के वैज्ञानिक युग में व्रत और पूजा-पाठ स्त्रियों की गुलामी की मानसिकता को दर्शाते हैं। इसलिए आज के युग में ऐसे पूजा-पाठ और व्रतों का कोई महत्व नहीं है।

फिर भी भारतीय संस्कृति की जड़ें बहुत मजबूत हैं और ऐसे अनर्गल तर्कों से वे उखड़ने वाली नहीं। हां यह अवश्य है कि स्त्री-पुरुष दोनों को समान रूप से एक-दूसरे को सम्मान देना चाहिए। दोनों के जीवन में एक-दूसरे की समान उपयोगिता और महत्व होना चाहिए।

भारतीय संस्कृति में नारी को पुरुष की अर्धांगिनी माना गया है अतः उसे दासी मानने की मानसिकता कुंठित मानसिकता है, जो पुरुष प्रधान समाज द्वारा पैदा की गई है। हमारे धर्मग्रंथों में जहां भी ऐसे संदर्भ आते हैं जब कोई स्त्री अपने पति को स्वामी या नाथ कहती है तो वहाँ पति भी अपनी पत्नी को देवी कहकर संबोधित करते हैं। ऐसे वक्तव्य एक-दूसरे के प्रति प्रेम और श्रद्धा को दर्शाते थे न कि शोषण को। हमारे यहां नारी सदैव पूजनीय और आदरणीय रही है। यज्ञ, हवन आदि वैदिक क्रियाएं भी बिना पत्नी के फलदायी नहीं मानी गई।

रंजना मिश्रा

अपनी-अपनी मान्यताओं के लिए सभी स्वतंत्र हैं। कोई ये व्रत करे या न करे पर जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए पति-पत्नी दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति प्रेम अत्यंत आवश्यक है।

पति और पत्नी जीवन की गाड़ी के दो पहिए कहे गए हैं। एक पहिया भी यदि कमजोर होगा तो गाड़ी सही रूप से नहीं चल पाएगी। ऐसे व्रत और पूजा-पाट भी प्रेम से ही उत्पन्न हुए हैं। स्त्रियों ने अपने पति की आयु को बढ़ाने की शुभकामनाएं करते हुए ऐसे व्रतों का पालन किया। यह आवश्यक नहीं कि महिलाओं के मन में पति के प्रति श्रद्धा न हो तो भी वो ऐसे व्रतों का पालन करें। जोर जबरदस्ती से इन व्रतों का पालन नहीं कराया जा सकता।

करवा चौथ आदि व्रतों और पूजा-पाठ का महत्व और फल तभी है जब उन्हें श्रद्धापूर्वक किया जाए। बिना श्रद्धा की गयी कोई भी पूजा और व्रत फलीभूत नहीं होते। अतः जब किसी महिला के मन में अपने पति के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना होगी और तब वह व्रत और पूजा-पाठ का पालन करेगी तभी उसे उसके सही फल की प्राप्ति हो सकेगी।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार है।)

क्षण भर की भूल जिंदगी भर के लिए गुनाहगार बना देती है

आजकल मानसिक संतुलन न होने के कारण छोटी-छोटी बातों में बहुत बड़ी घटनाओं को अंजाम दे देते हैं अब लोगों में सहनशीलता का अभाव होने से हत्या आत्महत्या करना आम बात होती जा रही हैं। विगत दिनों एक घटना सामने आयी जिसमें एक युवा ने प्रेम विवाह 3 माह पूर्व किया और अपने परिवार से अलग पति पत्नी के रूप में रह रहे थे अचानक कुछ बात पर युवा ने अपनी पत्नी की कुत्ता को बांधने वाली चेन से गला दबा कर चाकू से हत्या कर स्वयं अपने पिता और बहु के लेकर थाने गए। तीन माह की शादी में ऐसी कौन सी इतनी गंभीर बात हो गयी की इतना घातक कदम उठाने को मजबूर होना पड़ा।

पहले और आज भी पूरी जिंदगी साथ बिताने वाले 50 -60 से भी अधिक होने पर भी साथ रह रहे हैं। इस संबंध में एक बात सामने आयी हैं पहले शादी होती थी फिर प्रेम आज पहले प्रेम और उसके बाद शादी। प्रेम का आकर्षण अस्थायी होता हैं। शुरुआत में प्रेम अंधा होता हैं। उस समय सब समर्पण भाव रखते हैं। कुछ दिनों में शरीरिक आकर्षण खतम होने पर मानसिक, आर्थिक, प्रतिष्ठा में अंतर्द्वंद शुरू होता हैं युवा होने पर जोश में होश नहीं रहता हैं अनुभवहीनता के कारण उत्तेजना होना लाजिमी हैं। सबके अहम टकराते हैं, कोई किसी से कम नै होना चाहते इसका मुख्य कारण धर्म से दूर रहना और किसी गुरु से नियमबद्ध न होना। जबकि प्रेम कुछ शर्तों पर होता हैं जबकि शादी संतुलन पर आधारित हैं। एक दूसरे की बात का आदर करना सीखना चाहिए यहाँ एक बात जरुरी हैं की पुरुषऔर नारी में समानता हैं पर कुछ क्षेत्र ऐसे होते हैं जहाँ पुरुष उम्र में बड़े होने से और अनुभव होने के कारन उसकी बात का आदर दे और कुछ बातों को सुनकर सहनशीलता से उस समय को काटे या काट ले।

डॉ.अरविन्द प्रेमचंद जैन, लेखक

दो मनुष्यों की विचार धाराएं कभी एक नहीं हो सकती हैं, दो विपरीत ध्रुव होते हैं, उनमे पटरी बिठाना पड़ती हैं, सम्मान दे, आदर भाव रखे, अनुभव को महत्व दे पर बराबरी का अधिकार के कारण हम किसी से कम नहीं होने से विवाद का रूप किस दिशा में ले जाए कुछ नहीं कहा जा सकता हैं। इस घटना के बाद न्यायालय से दोषमुक्त होने के बाद हत्या का आरोप तो लगा और उसका दंड भोगना पड़ेगा एक बात विचारणीय हैं की आज युवाओं में इतना दुस्साहस कहाँ से आ रहा दिल्ली में भी सरे आम गोली मार कर एक युवती की हत्या कर दी इसके पीछे लव जिहाद के अलावा तामसिक भोजन, मोबाइल के द्वारा अनैतिक दृश्यों को देखना, काम जन्य रोगों से पीड़ित होना हैं। आहार, संस्कार वातावरण, परिजन और परिवेश का बहुत प्रभाव पड़ता हैं। ये सब भौतिक सुख क्षणिक होते हैं और इनका प्रतिफल जिंदगी भर भोगना पड़ता हैं। उत्तेजना में कुछ भी कर लेते हैं पर जिंदगी भर के लिए गुनाहगार बन जाते हैं। संतुलन, संयम, विवेक का हमेशा ध्यान रखे तभी जीवन सुखद होगा अन्यथा जीवन जीते जी स्वर्गवासी बन जाता हैं। इसके लिए सात्विक आहार, संयमित धार्मिक जीवन शैली का होना बहुत आवश्यक हैं। इस हेतु आनंद कही अनकही उपन्यास पठनीय हैं।

प्रोत्साहन भी, मनाही भी

भारत में नशाखोरी की समस्या विकराल रूप लेती जा रही है वर्जनाओं और पाबंदियों के लिए के लिए जाने जाना वाला हमारा देश इस समय नाशखोरी के मामले में दुनिया में दुसरे स्थान पर है। जाहिर तौर पर युवाओं की एक बड़ी आबादी किसी न किसी किस्म के नशे की आदी हो चुकी है। नशाखोरी किसी राज्य को कितनी क्षति पहुंचा सकती है पंजाब जैसा हरा-भरा राज्य इसका जीता जागता उदाहरण है। विडंबना यह है कि देश के अधिकांश प्रदेश राजस्व का बहाना लेकर नशाखोरी को बढ़ावा देने में लगे हैं।

एक ओर भारत को बडे गर्व के साथ युवा - शक्ति के तौर पर पेश किया जा रहा है,लेकिन इस तल्ख सच्चाई को तब आघात पहुंचता है जब हमें यह पता चलता हैं क के इस समय हमारा मुल्क दुनिया में नशाखोरी के मामले में द्वितीय स्थान पर है। इस समय हमारे मुल्क में 10:80करोड युवा आबादी धूम्रपान की गिरफ्त में है। देश में प्रतिवर्ष धूम्रपान की वजह से दस लाख लोगों की मौत होती है। यह आंकड़ा देश में होने वाली कुल मौतों का दस फीसदी है।भारत में सत्रह साल पहले धूम्रपान करने वाले पुरुषों की संख्या 7:9 करोड थी इसमें 2:9 करोड़ का इजाफा हुआ है।देश में धूम्रपान करने वाली महिलाओं की संख्या 1:1 करोड़ है। शोध के अनुसार भारत में पिछले डेढ दशक में सिगरेट पीने वालों की तादाद काफी बढ़ी हैं। 15से 29 वर्ष तक की आयु वर्ग के लोगो में धूम्रपान की लत में वृद्धि हुई है। शहरों में धूम्रपान करने वालों की संख्या में 68 और ग्रामीण क्षेत्रों में 26 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सिगरेट पीने के मामले में आज भारत पूरी दुनिया में द्वितीय स्थान पर है।अभी सिर्फचीन से पीछे है।जिस तीव्र गति से महानगरों में 15-19 वर्ष की आयु के किशोरों में सिगरेट, शराबखोरी की लत बढ़ रही है यदि यही गति बनी रही तो जल्द ही वह चीन को भी पीछे छोड़ देगा ।

इग वार डिस्टॉर्सन और वर्डोमीटर की रिपोर्ट के अनुसार पूरी दुनिया में मादक पदार्थों का अवैध व्यापार सालाना लगभग 30 लाख करोड रूपए का है। वही नेशनल ड्रग डिपेंडेंट ट्रीटमेंट एम्स की वर्ष 2019 की रिपोर्ट बताती है कि अकेले भारत में ही तकरीबन 16 करोड़ लोग शराब का नशा करते हैं। इसमें बड़ी संख्या महिलाओं की भी है। रिपोर्ट के अनुसार लगभग 1:5 करोड़ महिलाएं देश में शराब, अफीम और कैनाबिकस का सेवन करती है। चिंताजनक बात है कि हर 16 में से एक महिला शराब की इतनी लती है कि इसके बिना वह रह नहीं रिपोर्ट के अनुसार भारत की 20 प्रतिशत आबादी 10 से 70 वर्ष के बीच है दरअसल में हमारे मुल्क में पारंपरिक नशे जैसे कि तम्बाकू, हुक्का, शराब, अफीम के अलावा सिंथेटिक ड्रग्स, स्मैक, कोकीन, मारिजुआना, हिरोइन, का चलन तेजी से बढ़ रहा हैं।

नशे को विनाशकारी चीजों में शुमार किया जाता है। पहले सामाजिक स्तर पर पीने वाले आदमी को इसकी लत लगने में दस साल का समय लगता था, आज सिर्फ दो साल में ही उसे लत लग जाती है, राज्यों का आबकारी महकमा एक तरफ नशे को बढ़ावा देने में लगा रहता है तो मध-निषेध महकमा इसे रोकने में। यह कैसा विरोधाभास है? दुनिया भर के तमाम चिकित्सीय शोध बता चुके है कि नशा कोई भी हो वह हैं धीमा जहर ही।

यह एक विडंबना ही है कि नशे को लेकर हमारी सरकारों का मापदंड दोहरा है। किसी भी किस्म के नशे को अच्छा नही माना जाता है फिर भी इसका चलन बदस्तूर जारी है। यही वजह है किसिगरेट, शराब, तंबाकू, बीड़ी, गुटखा आदि नशीली चीजों का उत्पादन और बिक्री हो रही है, गौरतलब हैं कि वही दूसरी तरफ नशीली चीजों का सेवन न करने के खर्चीले अभियान चलाए जा रहे है। पंजाब जैसा साधन संपन्न प्रदेश नशाखोरी की वजह से प्रदेश में चर्चा का विषय बना हुआ हैं। सिगरेट का सेवन ज्यादा खतरनाक है, क्योंकि यह उन लोगों को भी प्रभावित करती है, जो पीने वाले के इर्द-गिर्द होते है। शराब या तंबाकू का सेवन करने वाले सीधे तौर पर खुद को क्षति पहुंचाते है, लेकिन आर्थिक रूप से वे अपने परिवार को ही बर्बाद कर देते हैं।

भारत में सिगरेट की तरह शराब का सेवन करने वालो तादाद बढ़ रही है। जहरीली शराब पीने से लोग अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। अभी हाल ही में उज्जैन में जहरीली शराब के सेवन से 14 लोगो की मौत हुई है। आश्चर्यजनक है, सरकार का ही एक अंग नशा बिकवाने में मशगूल रहता है और दूसरा रूकवाने में। मगर वास्तविकता यह है कि शराब सिगरेट तबाकू की बिक्री से सरकार के खजाने में पैसा आता है। लेकिन असल सवाल तो यह है कि एक तरफ सरकारें खजाना भरती है और दूसरी और नशा-विरोधी अभियान पर मोटी रकम फूकती है। यदि नशाखोरी से लोगों का अहित हो रहा है तो ऐसी आमदनी किस काम की? भारत में लंबे समय से गुजरात और बिहार में शराब की बिक्री पर रोक हैं, वह भी तब जब बिहार को गरीब राज्यों में गिना जाता है और विकास कार्यों के लिए उसे राजस्व की सबसे ज्यादा जरूरत है।

उधर हालात बदतर होते देख नशे पर पांबदी को लेकर अदालतें भी काफी सक्रिय हुई है । दो अक्टूबर 2008 को पहली बार सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर प्रतिबंध लगाया गया। 2004 में स्कूलों से तीन सौ मीटर के दायरे में तंबाकू और गुटखा आदि की बिक्री और सेवन आदि पर प्रतिबंध लगा। मई 2009 में पहली बार कानून बनाया गया कि तंबाकू किसी भी उत्पाद के पैकेट पर चालीस प्रतिशत हिस्से पर फेफड़ों के चित्र से बनी चेतावनी दिखाई जाएगी। वर्तमान में एक सिगरेट के पैकेट के तकरीबन 65 प्रतिशत भाग पर मुंह और गले के कैसर के चित्र और 15 प्रतिशत जगह पर लिखित चेतावनी दी जाती है। इस सबके बावजूद भारत में पढ़े-लिखे युवाओं में सिगरेट पीने की लत तेजी से बढ़ रही हैं

मुकेश तिवारी

हकीकत यह है कि नशे की चीजों के पैकेटों पर दी जाने वाली स्वास्थ्य चेतावनी गले और मुह के कैसर के चित्र और तमाम तरह के विज्ञापन किसी भी नशे को कम करने के लिए रत्ती भर भी भूमिका नहीं निभा पा रहे हैं।आने वाले वर्सो में नशाखोरी की लत न जाने कितनी तबाही लेकर आएगा क्या कोई सुन रहा है और इस तबाही की बू सूंघ भी पा रहा है?

न्यूज ब्रीफ

मोरी ने किया रोड का भूमि पूजन

माही की गूंज, सारंगी (झाबुआ)। ग्राम पंचायत कसारखड़ी के बिलवा फलिए में लोगों के आवागमन के लिए 15 लाख की लागत से बनने वाला रोड का भूमि पूजन मुख्य अतिथि ग्रामीण भाजपा मंडल अध्यक्ष एवं जिला महामंत्री सुखराम मोरी द्वारा नारियल फोड़ कर किया गया। जिला महामंत्री ने कहा इस रोड के बनने से गांव के लोगों को काफी सुविधा होगी, भूमि पूजन के अवसर पर सरपंच प्रतिनिधि भाजपा मंडल महामंत्री सुखराम मोरी, पंच राकेश गामड़, कंवरलाल गणावा, दिलीप डोडियार, नरसिंह मोरी, भेरू डिंडोर, रामलाल भाबर, जगदीश मोरी, भाजपा कार्यकर्ता के अलावा आदि ग्रामीण उपस्थित थे।

जनजाति विकास मंच पेटलावद निकालेगा वाहन रैली

माही की गूंज, पेटलावद (झाबुआ)। जनजाति विकास मंच पूरे भारतवर्ष में भगवान बिरसा मुंडा जयंती के उपलक्ष में जनजाति गौरव दिवस मना रहा है। इसी तारतम्य में जनजाति विकास मंच द्वारा पेटलावद खंड में भी प्रत्येक गांव में जनजाति गौरव दिवस मनाया जाएगा। इसी को लेकर खंड टोली की बैठक आयोजित की गई, जिसमें मुख्य रूप से जनजाति विकास मंच के रतलाम विभाग युवा प्रमुख गौरसिंह कटारा ने विषय रखा, तथा योजना बनाई गई। 8 नवंबर को पेटलावद खंड स्तरीय वाहन रैली निकाली जाएगी। जिसमें प्रत्येक गांव से वाहन आएंगे तथा 9 नवंबर से 15 नवंबर तक बिरसा सप्ताह के रूप में प्रत्येक गांव में प्रत्येक घर पर बिरसा भगवान की पूजा की जाएगी एवं प्रत्येक घर भगवान बिरसा मुंडा जी की तस्वीर दी जाएगी।

सरपंच ने सांसद पति श्रीमती डामोर को दिया मांग पत्र

माही की गूंज, खच्चरटोड़ी। सांसद गुमानसिंह डामोर की पत्नी श्रीमती सुरज डामोर सोमवार को रूपाणपुर दौरे पर थी, इस दौरान खच्चरटोडी सरपंच प्रदीप गणावा ने पंचायत के विकास कार्यों को लेकर श्रीमती सुरज डामोर से तीन मांग रखी, उन्होंने 3 किमी के दो रास्तो को पक्का रोड बनाने के लिए सांसद के नाम लिखित आवेदन दिया। श्रीमती सुरज डामोर ने आश्वासन दिया कि, वे जरूर समस्या का समाधान कराएंगे।

25 नवंबर को होगा नामावली प्रारूप का प्रकाशन

माही की गूंज, खरगोन। निर्वाचक नामावली के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा संशोधन किया गया है। अब 16 नवंबर के स्थान पर 25 नवंबर को निर्वाचक नामावली के प्रारूप का प्रकाशन किया जाएगा। अपर कलेक्टर एमएल कनेल ने बताया कि, दावे आपत्ति दर्ज कराने की अंतिम तिथि 25 नवंबर से 24 दिसंबर तक की जा सकेगी। वहीं विशेष कैंप 12, 13, 19 व 20 दिसंबर को आयोजित होंगे। दावे आपत्तियों का निराकरण 7 जनवरी तक किया जाएगा। निर्वाचक नामावली का अंतिम प्रकाशन 15 जनवरी को होगा।

आई.पी.एल. का सट्टा लगाने वाले आरोपियो को भेजा पुलिस रिमाण्ड पर

माही की गूंज, बड़वानी। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट बडवानी जैनुल आब्दीन ने पारित अपने आदेश में आईपीएल का सट्टा लगाने के आरोपी तरूण पिता घमण्डीलाल, पुष्पेन्द्र पिता सीताराम, धीरेन्द्र पिता सीताराम एवं मनोज पिता शिवराम को धारा 4(क), 3/4 द्युत अधिनियम एवं 43, 66 आई.टी. एक्ट के तहत एक दिन की पुलिस रिमाण्ड पर भेजा।

खबर लगने के बाद पत्रकार के साथ फोन पर गाली गलौच कर अभद्र भाषा का प्रयोग कर धमकाया

केरेक्टर लुस प्राचार्य बौखलाया

थाने में की रिपोर्ट, प्राचार्य पर प्रकरण दर्ज करने की कि मांग, आज सौपेंगे ज्ञापन

माही की गूंज, पेटलावद (झाबुआ)।

पेटलावद के अब तक के सबसे विवादित प्राचार्य और फर्जी नियुक्ति व फर्जी छात्रवृत्ति घोटाले में शामिल पेटलावद एकलव्य आवसीय विद्यालय के प्राचार्य योगेंद्र प्रसाद द्वारा पेटलावद के पत्रकार चंद्रशेखर राठौड़ को योगेन्द्र प्रसाद ने मोबाईल नंबर 9425972074 से फोन कर बुधवार सुबह 11:42 मिनिट पर अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए धमकी दी गई कि, तुने मेरे खिलाफ समाचार छापा है तु समाचार छापने वाला कौन होता है? मै पेटलावद का रहने वाला हूँ, तुझे ठिक कर दुंगा और तेरे खिलाफ झुठे प्रकरण बनाकर तुझे फंसा दुंगा, तुं मुझे परेशान कर रहा है, तुं मुझे पहचानता नहीं है, मैं तुझे देख लुगा, मैं तुझे पैसे मांगने का आरोप लगाकर कहीं भी फंसा दुगा। इस प्रकार कहते हुए प्राचार्य के द्वारा पत्रकार को इसी नंबर से दो बार फोन कर धमकी दी गई। पत्रकार राठौर ने बताया, मुझे प्राचार्य द्वारा धमकाया गया है जिन शब्दो का प्रयोग किया गया है वह रिकॉर्डिंग है।

मय रिकॉर्डिंग के पत्रकारों के साथ पेटलावद थाने पर पहुंच कर प्राचार्य के विरुद्ध पत्रकार ने रिपोर्ट दर्ज की है, जिसमें बताया कि, शासकीय सेवक होकर स्कुल का प्राचार्य है तथा मुझसे पेपर में समाचार छापने की रंजिश रखते हुए कभी भी धोखे से मेरे खिलाफ कोई षड़यंत्र कर सकता है एवं मोबाइल पर धमकी देने एवं विवाद करने के संबंध में प्राचार्य के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई कर सुरक्षा की मांग की है।

आज सौपेंगे ज्ञापन

पत्रकार को प्राचार्य द्वारा धमकी देने के बाद पत्रकार संघ में भारी रोष व्याप्त है, पिछले दिनों में पत्रकारों को धमकाने की ओर मारपीट करने की कई घटना हो चुकि है, लेकिन आवेदन देने के बाद भी पुलिस कार्रवाई नहीं करती है। अभी भी मय प्रमाण मोबाइल रिकॉर्डिंग के साथ शिकायत दर्ज करवाई है, पत्रकार संघ के जिलाध्यक्ष संजय भेटवरा और तहसील पत्रकार संघ के अध्यक्ष मोहन पडियार ने बताया कि, मामले में कल मुख्यमंत्री के नाम जवाबदार अधीकारियों को ज्ञापन सोपकर कड़ी कार्रवाई की मांग करेंगे।

प्राचार्य योगेंद्र प्रसाद द्वारा इस प्रकार से पत्रकार को धमकी देने का पहला मामला नही है, इससे पहले भी प्राचार्य इस प्रकार से धमकी देता रहा है, प्राचार्य पर अधिनस्त महिला कर्मचारी पर बलात्कार जैसे गंभीर आरोप भी लग चुका है और छेड़खानी का मामला न्यायलय तक पहुँच चुका है, ऐसे गम्भीर आरोपो के बाद भी केरेक्टर लुस प्राचार्य को विभाग ने कन्या स्कूल की बड़ी जिम्मेदारी दे रखी है और ऐसे गंभीर आरोपो के बाद भी जिले के बड़े अधिकारी और विभाग के रहमोकरम के साथ हर बार बचता आ रहा है।

बालक और बालिका छात्रावास के बीच रखें प्रॉपर दूरी
कलेक्टर ने भीकनगांव व झिरन्या क्षेत्रों का किया भ्रमण

माही की गूंज, खरगोन।

कलेक्टर श्रीमती अनुग्रह पी ने बुधवार को भीकनगांव और झिरन्या तहसील के भ्रमण पर रही। इस दौरान उन्होंने आदिम जाति कल्याण विभाग के स्कूल, जल मिशन अंतर्गत नलजल योजना, आश्रम, छात्रावास, झिरन्या तहसील कार्यालय और जनपद कार्यालय का निरीक्षण किया। इसके अलावा उन्होंने मारुगढ़ में 35 करोड़ 46 लाख रुपए की लागत से बन रहे कन्या परिसर और एकलव्य परिसर का अवलोकन कर निर्माण कार्य को देख व्यवस्थाएं सुधारने के निर्देश दिए। पीआईयू के एसडीओ अमित वास्कले ने बताया कि, योजना के प्रारंभ में शासन ने कन्या परिसर निर्माण के लिए स्वीकृति प्रदान की। इसके बाद स्कूल, कन्या छात्रावास और आवासीय भवन बन जाने के बाद इसी को एकलव्य विद्यालय बनाने के लिए स्वीकृति प्रदान की गई। कन्या परिसर के लिए 27 करोड़ 46 लाख रुपए और एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय के लिए पृथक से 8 लाख रुपए की स्वीकृति प्रदान की गई। कलेक्टर श्रीमती अनुग्रह ने कहा कि, बालिकाओं से छात्रवास से बालक छात्रावास की प्रॉपर दूरी रखें। साथ ही बालिका छात्रावास को पूरी तरह बाउंड्रीवालयुक्त करें। वैसे भी यह क्षेत्र रहवासी इलाके से दूरी पर है। इसलिए शिक्षा के साथ-साथ सुरक्षा भी महत्वपूर्ण है।

मंडी में निगरानी के लिए पटवारी व कृषि अधिकारी होंगे तैनात

माही की गूंज, खरगोन।

किसान संघ इकाई द्वारा प्राप्त शिकायतों के मद्देनजर कलेक्टर श्रीमती अनुग्रह पी ने निर्णय लिया कि, कृषि मंडियों में अलग से निगरानी की जाए। कलेक्टर श्रीमती अनुग्रह ने खरगोन सहित भीकनगांव, बड़वाह, सनावद, कसरावद और करही कृषि उपज मंडी में जहां, कपास की खरीदी की जा रही है, वहां पर पृथक से पटवारी और ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों को तैनात किया है। किसान संघों ने सीसीआई द्वारा किसानों से कपास समर्थन मूल्य से कम दाम तथा अन्य तरह की आ रही समस्याओं के मद्देनजर निगरानी के लिए मांग की थी।

कलेक्टर ने की प्रधानमंत्री आवास की प्रशंसा

माही की गूंज, बड़वानी। कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा एवं जिला पंचायत सीईओ ऋतुराज सिंह ने ग्राम पंचायत मोयदा, रोझानी के विक्रय हरेसिंह के प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बनाए गए मकान की सुन्दरता की प्रशंसा कर उनके परिजनों से आवास निर्माण की लागत एवं मिली किश्तो की जानकारी प्राप्त की।

प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बने हुए मकान की सुन्दरता देखकर रूके कलेक्टर एवं जिला पंचायत सीईओ ने मौके पर ही खेल रहे कक्षा 7वीं के विद्यार्थी मास्टर मनीष निगवाल से भी चर्चाकर जाना कि, वे लॉकडाउन एवं वर्तमान परिस्थितियों के मध्य किस प्रकार अपनी पढ़ाई कर रहे है, इस पर मास्टर मनीष ने बताया कि, वे मोयदा के शासकीय विद्यालय से कक्षा 7वीं में अध्ययनरत है। वर्तमान में वे घर पर ही रहकर अपनी पढ़ाई, शिक्षको के सहयोग से कर रहे है।

इस पर कलेक्टर ने विद्यार्थी से 7 एवं 13 का पहाड़ा पूछा, जिस पर बालक द्वारा सही-सही पहाड़ा सुनाने पर अधिकारी ने उसे मौके पर ही नगद इनाम देकर पुरस्कृत किया।

बुधवार को खरगोन कपास मंडी में 6 हजार क्विंटल कपास की हुई आवक

माही की गूंज, खरगोन। बुधवार को स्थानीय कपास मंडी में 6 हजार क्विंटल कपास की आवक हुई। खरगोन मंडी सचिव रामवीर किरार ने बताया कि, बुधवार को 430 वाहन और 152 बैलगाड़ी कपास की नीलामी के लिए आई। इस दौरान कुल 6 हजार क्विंटल कपास की आवक हुई है। बुधवार को कपास का अधिकतम भाव 5725, न्यूनतम भाव 3600 व औसत भाव 4650 रूपए रहा। जबकि खरगोन अनाज मंडी में गेहूं का अधिकतम भाव 1860, न्यूनतम भाव 1585 व औसत भाव 1640 रूपए रहा। ज्वार का अधिकतम भाव 1229, न्यूनतम भाव 1172 व औसत भाव 1229 रूपए रहा। इसके अलावा मक्का का अधिकतम भाव 1360, न्यूनतम भाव 1230 व औसत भाव 1325 रूपए तथा सोयाबीन का अधिकतम भाव 4151, न्यूनतम भाव 3500 एवं औसत भाव 3870 रूपए रहा।

कलेक्टर ने प्रस्तावित सीएम राईज स्कूल का किया औचक निरिक्षक

माही की गूंज, बमनाला। म.प्र. शासन द्वारा प्रस्तावित सीएम राईज स्कूलो के तहत चयनित शा. हाई सेकंडरी स्कूल बमनाला का कलेक्टर श्रीमती अनुग्रह पी. ने औचक निरिक्षक किया। स्कूल मे साफ्सफाई के निर्देश दिए प्राचार्य अखिलेश कानुनगो ने स्कूल मे शिक्षकों की कमी व जीर्ण-शीर्ण भवनो पर ध्यान दिलाया, वहीं शिक्षक राजेंद्र सौहनी ने अपनी स्कूली समस्याओं से कलेक्टर को अवगत कराया, इसपर कलेक्टर ने सहायक आयुक्त जेएस डामोर व जिला शिक्षा अधिकारी केके डोरे को समस्याओं के निराकरण हेतु निर्देश दिए।

कलेक्टर ने सनगॉव नर्सरी पहुंचकर देखा स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा तैयार किये जा रहे पौधो को

माही की गूंज, बड़वानी।

कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा एवं जिला पंचायत सीईओ ऋतुराज सिंह ने बुधवार को विकासखण्ड राजपुर के ग्राम सनगॉव पहुंचकर वहॉ पर संचालित शासकीय नर्सरी का निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारी ने मनरेगा के तहत महिला स्व सहायता समूह द्वारा तैयार किए जा रहे फ्लो के पौधो के कार्य का भी निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश संबंधितो को दिए।

कलेक्टर के निरीक्षण के दौरान उपसंचालक उद्यानिकी अजय चैहान ने बताया कि, इस नर्सरी में मनरेगा अंतर्गत स्व सहायता समूह को 3 साल के लिए पौध उत्पादन कार्य से संलग्न किया गया है। इसके तहत इन महिलाओं से प्रथम वर्ष में सवा लाख पौधे तैयार करवाए जायेंगे। जबकि दूसरे एवं तीसरे वर्ष 25-25 हजार पौधे तैयार करवाए जायेंगे।

महिलाओं को दिया गया बैंक सखी का प्रशिक्षण

माही की गूंज, बड़वानी। स्टार स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान आरसेटी बड़वानी में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन बड़वानी द्वारा चयनित स्व सहायता समूह सदस्य महिलाओं और युवतियो को मिशन 1 जीपी 1 बीसी अंतर्गत 6 दिवसीय बैंक मित्र उद्यमिता विकास प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण प्राप्त महिलाओं ने 'इंस्टीट्यूट इंडियन इंस्टीट्यूट आफबैंकिंग पहलनेस' के द्वारा आयोजित ऑनलाइन टेस्ट भी दिया, जिसमें 24 प्रतिभागियों ने सफलता प्राप्त की। अब उक्त 24 महिलाएं बड़वानी जिले के विभिन्न ग्राम पंचायतों में बैंक सखी का कार्य कर वित्तीय सेवाएं ग्रामीण स्तर तक पहुंचाएगी।

कचरा गाड़ी एवं मुक्तिधाम बनवाने हेतु युवाओं ने की कलेक्टर से चर्चा

माही की गूंज, बड़वानी। कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा एवं जिला पंचायत सीईओ ऋतुराजसिंह के जुलवानिया पहुंचने पर अजय यादव के नेतृत्व में आए युवाओं ने अधिकारी से ग्राम विकास में सहयोग पर चर्चा की। इस पर अधिकारी ने यथासंभव सहयोग दिए जाने का आश्वासन दिया।

कलेक्टर से चर्चा के दौरान युवाओं ने बताया कि, जिले की सबसे बड़ी ग्राम पंचायत एवं पुराने एबी रोड़ पर स्थित जुलवानिया ग्राम पंचायत को कचरा गाड़ी की विशेष आवश्यकता है। जिससे घर-घर जाकर कचरा का संग्रह किया जा सके। इसी प्रकार युवाओं ने बताया कि, पूर्व में बना मुक्ति धाम स्टाप डेम बनने के कारण डूब गया है। जिसके कारण नए मुक्तिधाम बनवाने की भी अत्यन्त आवश्यकता है।

पुजारी को मंदिर की जमीन पर आने से दबंगों ने धमकाया, पुजारी संघ ने एसडीएम से लेकर प्रभारी मंत्री तक की शिकायत

माही की गूंज, रतलाम।

रतलाम जिले के जावरा जनपद क्षेत्र के ग्राम आलमपुर ठिकरिया का मामला है जहां पर राम मंदिर की जमीन पर बोवनी के लिए गए पुजारी, जिसको लेकर गांव के ही कुछ दबंगो ने पुजारी को मंदिर की जमीन पर आने को लेकर डराया धमकाया गया, जिसको लेकर पुजारियों द्वारा पहले भी इसकी शिकायत रतलाम पुलिस अधीक्षक से की गई थी ओर पुनः जावरा एसडीएम से शिकायत करने आए पुजारियो ने एसडीएम को बताया कि, कुछ गांव के दबंगो ने ही राम मंदिर की कृषि भूमि पर आकर जमीन पर बोवनी करने से रोका गया और डराया धमकाया गया, तो एसडीएम ने इस मामले को लेकर आश्वासन दिया कि, जो दबंग लोग है उनकी जानकारी लेकर जांच करवाई जाएगी और अगर दोषी पाए जाएंगे तो उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। वही जावरा एसडीएम ने पुजारी से बोला सुनाओ मुझे राम जी की आरती तो, तत्काल जय जगदीश हरे की आरती शुरू कर दी। वही वैष्णव बैरागी महासंघ के प्रदेश महासचिव बालूदास बैरागी ने इस विषय को लेकर एसडीएम को बताया कि, आए दिन पुजारियो को परेशान करते रहते है ओर मंदिर जमीन का विवाद करते है उक्त मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों को कड़ी सजा दिलाई जाए की मांग की।

राम मंदिर की जमीन की बुवाई करने को लेकर मंदिर पुजारी कमला बाई पति स्व. नारायण दास बैरागी ने बताया कि, कुछ दबंगो को लेकर कई जगह पर इसकी शिकायत की गई पर अभी तक कोई कार्रवाई नही की गई, गांव के ही कुछ दबंग लोग रामप्रसाद पिता वरदा एव रामचंद्र पिता मांगू डाबी व राधेश्याम पिता गोरधनलाल पाठक उनके साथियों द्वारा बार-बार मन्दिर की जमीन पर आकर परेशान कर रहे है, इन लोगो ने जमीन पर बुआई करने से भी रोका गया, जिसको लेकर पुजारी, संघ के साथ मिलकर जावरा अनुविभागिय अधिकारी व प्रभारी मंत्री रतलाम के साथ जावरा विधायक राजेंद्र पांडेय को इसकी शिकायत की गई।

पोषण पुनर्वास केंद्र पाटी में खिलौना बैंक का हुआ शुभारंभ

14 दिवस से भर्ती कुपोषित बच्चे को खिलौना भेंट कर, किया डिस्चार्ज

माही की गूंज, बड़वानी।

पोषण पुनर्वास केंद्र पाटी में अधिकारियों के सहयोग से खिलौना बैंक प्रारंभ किया गया है। उल्लेखनीय है कि, कलेक्टर बड़वानी शिवराज सिंह वर्मा ने जिले के समस्त एनआरसी केंद्रों में खिलौना बैंक खोलने के कार्य का शुभारंभ 10 अक्टूबर को जिला चिकित्सालय के एनआरसी केंद्र पर किया था।

इसी अभियान के तहत मंगलवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाटी के पोषण पुनर्वास केंद्र में खिलौना बैंक का शुभारंभ किया गया। इस दौरान पिछले 14 दिन से पुनर्वास केंद्र में भर्ती 3 वर्षीय बालिका को पोषण पुनर्वास केंद्र से डिस्चार्ज किया गया। खिलौना बैंक का उद्घाटन भी इसी बालिका की माता के हाथों से फीता काटकर कराया गया।

पोषण पुनर्वास केंद्र की पदाधिकारी सुश्री गायत्री वास्कले एवं शिवराम वास्कले ने बताया कि, ग्राम बुदि निवासी 3 वर्षीय बालिका सुनीता पिता पेमा को 19 अक्टूबर को एनआरसी पाटी में भर्ती कराया था। तब उसका वजन 6 किलो 400 ग्राम था। लेकिन उसे 14 दिवस तक पुर्नवास में दी गई सुविधा व इलाज के बाद अब उसका वजन बढ़कर 7 किलो 380 ग्राम हो गया। डिस्चार्ज के दिन इस बालिका को उपहार स्वरूप उसके मन पसंद का एक खिलौना भी भेंट किया।

शासन के नियमों को ताक में रख चल रहा एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय

प्राचार्य प्रसाद की हठधर्मिता

कोविड-19 की गाइड लाइन का नहीं हो रहा पालन

बिना सोशल डिस्टेंसीग और बिना मास्क के प्रार्थना करते स्कूली छात्र और बिना मास्क के उपस्थित शिक्षक।

माही की गूंज, पेटलावद।

पेटलावद से दूर बरवेट रोड पर बने एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय इन दिनों पूरी तरह से संचालित किया जा रहा है। जहा एक और सरकारी स्कूल सहित निजी स्कूल शासन की गाइडलाइन को धयान में रख कर संचालित हो रहे हैं तो, वही दूसरी ओर एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय पेटलावद के प्राचार्य अपनी मनमानी में लगे होकर बच्चों के जीवन से खिलवाड़ करने में लगे हैं। देश मे कोरोना संकट अभी पूरी तरह समाप्त हुआ भी नही है और लगातार नए मामले सामने आ रहे हैं, ऐसे मे सरकार ने बच्चों के प्रति विशेष ध्यान देते हुए शिक्षा सत्र 2020-21 के लिए कई प्रावधान किए हैं जिसके चलते कक्षा 9 से 12 तक के छात्र-छात्राएं परिजनों की सहमति से अपनी संस्था में जा कर शिक्षकों का मार्गदर्शन ले सकेंगे। शासन ने संस्थाओ को सख्त निर्देश दिया है कि, कोरोना की गाइडलाइन का पालन कर मास्क, सोशल डिस्टेंसीग और सेनेटाइजर का प्रयोग करना है।

वही सारे नियमो को ताक में रख एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय के प्राचार्य विद्यालय को सामान्य व्यवस्था अनुसार संचालित कर कोरोना के लिए विद्यालयों के लिए जारी गाइडलाइन को ताक में रख बच्चों के जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं। प्राचार्य प्रसाद की हटधर्मिता के चलते संस्था में प्रार्थना से लेकर सारे शिक्षकन सत्र चलाया जा रहा है, संस्था परिसर से प्रार्थना का फोटो भी सामने आया है जिसमे साफ देखा जा रहा हैं कि, प्रार्थना के दौरान किसी भी छात्रा व शिक्षक ने मास्क नही पहना है और न ही सोशल डिस्टेंसीग का पालन किया जा रहा। मामले में जिला सहायक आयुक्त प्रशांत आर्य का कहना है कि, इस प्रकार से संस्था का संचालन किया जा रहा है तो गलत है मैं जानकारी लेकर संबधित के प्राचार्य के विरुद्ध कार्रवाई करवाता हुं।

नाबालिग लड़की को अपहरण कर ले जाने वाला युवक आया पुलिस की गिरफ्त में

शादी का प्रलोभन देकर भगाने का मामला दर्ज, युवक को भेजा जेल

माही की गूंज, रतलाम।

जिले के मावता से नाबालिग लड़की को उसके ही गांव का एक लड़का बहला-फुसलाकर अपने साथ जोधपुर भगाकर ले गया था। कालूखेड़ा थाना प्रभारी मधु राठौर के द्वारा साइबर सेल की मदद एवं मुखबिर की सूचना के आधार पर टीम गठित कर जोधपुर (राजस्थान) भेजी। पुलिस टीम ने आरोपी के कब्जे से लड़की को छुड़ाकर अपहरण कर ले जाने वाले आरोपी युवक धारासिंह पिता दातारसिंह निवासी मावता को गिरफ्तार किया गया। अपराध क्रमांक 124/20 धारा 363 भादवी में अपराध दर्ज कर न्यायालय मे पेश किया गया जहां से आरोपी युवक को जेल भेजा गया।

थाना प्रभारी मधु राठौड़ ने बताया कि धारासिंह नाम का युवक इसी के गांव की लड़की को जो कि, नाबालिक है उसे बहला फुसलाकर अपने साथ भगा के राजस्थान के जोधपुर ले गया था जहां से पुलिस टीम भेजकर लड़की को लड़के के कब्जे से छुड़वाया ओर लडके को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया, पूर्व में भी यह लड़का ऐसी वारदात कर चुका है। उक्त आरोपी पहले भी इसी प्रकार से लड़की को भगा के ले जाने का मामला दर्ज है जो अपराध क्रमांक 91/2016 धारा 376, 363, 366 भादवी एवं 5/6 पास्को एक्ट में दर्ज हुआ था।

कोरोना मरीज की मौत के बाद हुआ खुलासा, इंदौर के बड़े हॉस्पिटल में हुआ अमानविय कृत्य, लगा इंजेक्शन बेचने का आरोप

अखिल भारतीय सिर्वी महासभा के बैनर तले कार्रवाई के लिए सौंपा ज्ञापन

माही की गूंज, पेटलावद।

कोरोना मरीज की मौत के बाद अस्पताल प्रबंधन द्वारा कोरोना मरीज को लगने वाला इंजेक्शन बेचकर दूसरे मरीज को लगाने का मामला सामने आया है। अखिल भारतीय सिर्वी महासभा मध्यप्रदेश के बैनर पर सिर्वी समाज पेटलावद के युवाओं ने मध्यप्रदेश के राज्यपाल व मुख्यमंत्री के नाम अनुविभागीय अधिकारी पेटलावद को ज्ञापन सौपते हुए बताया कि, कोरोना की रिपोर्ट पॉजिटिव आने के बाद ग्राम कापसी निवासी केलाशचंद्र पिता मोतीलाल सिर्वी को 8 अक्टूबर को इंदौर के एमजीएम सुपरस्पेशलिटी अस्पताल में इलाज हेतु भर्ती कराया गया था। जहा परिजनो को अस्पताल प्रबंधन ने कोरोना मरीज को लगने वाले एक्टिमरा 400 एमजी इंजेक्शन लाने को कहा गया और समय-समय पर मरीज के परिजनो द्वारा उक्त इंजेक्शन अस्पताल प्रबंधन को उपलब्ध कराए गए। मृतक के परिजनों का आरोप है कि, अस्पताल के अधिकारियों और कर्मचारियों की मिलीभगत से उक्त इंजेक्शन संबधित मरीज को नही लगाते हुए अन्य व्यक्ति को बेच दिए ओर हमारे मरीज को नही लगाए, जिससे मरीज की स्थिति बिगड़ गई, जिसके बाद मरीज को 17 अक्टूम्बर को इंदौर के ही मेदांता अस्पताल में भर्ती करवाया गया जहा उपचार के दौरान उसकी मृत्यु हो गई।

मृतक के परिजनों का आरोप है कि, सुपरस्पेशलिटी अस्पताल इंदौर के प्रबंधन एवं कर्मचारी द्वारा निजी स्वार्थ साधने के लिए मरीज की जान से खिलवाड़ करने के लिए इंजेक्शन अन्य मरीज के लिए बेच दिया गया, जिससे भर्ती कैलाशचंद्र सिर्वी की हालत बिगड़ी ओर उनकी मौत हो गई। अस्पताल के इस कुकृत्य और अमानवीय कृत्य के कारण हमारे परिवार के व्यक्ति की मौत हो गई, जिससे परिवार को अपने व्यक्ति के साथ लाखो की आर्थिक क्षति भी हुई है। सिर्वी समाज के युवाओं ने ज्ञापन सौपते हुए सुपरस्पेशलिटी अस्पताल प्रबंधन एवं वहां के कर्मचारी के विरुद्ध जांच कर दोषियों के विरुद्ध ठोस कार्रवाई की मांग की व पीड़ित परिवार को आर्थिक क्षति की भरपाई सुनिश्चित करने की भी मांग की गई।

सरपंच व आमजनों से चर्चा कर कलेक्टर ने ग्रामीण क्षेत्रों की समस्या जानी

माही की गूंज, शाजापुर।

वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए कलेक्टर दिनेश जैन ने जिले की जनपद पंचायत शाजापुर की ग्राम पंचायत रिंगनीखेड़ा, पीपलिया इन्दौर एवं चौसला मुसलमान, जनपद पंचायत मो. बड़ोदिया की ग्राम पंचायत कुम्हारियाखास, मालियाहेड़ी एवं उमरियादया, जनपद पंचायत कालापीपल की ग्राम पंचायत बागोदा, कमालपुर एवं रामड़ी तथा जनपद पंचायत शुजालपुर की ग्राम पंचायत मगरानिया, रायपुर एवं सालिया कुल 12 ग्राम पंचायतो के सरपंचो सहित आमजनों से चर्चा कर ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं की जानकारी ली।

वीडियो कांफ्रेंसिंग में शामिल ग्राम पंचायतों के सरपंच से कलेक्टर श्री जैन ने ग्राम पंचायत क्षेत्र की समस्याओं की जानकारी ली और कहा कि, उनके द्वारा बताई गई समस्याओं का शीघ्र निराकरण किया जाएगा। कलेक्टर ने सरपंचो से कहा कि, कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम के लिए सुरक्षात्मक उपाय अपनाने के लिए ग्रामीणों को सतत् प्रेरित करते रहें। कलेक्टर ने ग्रामों की पेयजल समस्या, आंगनवाड़ियों द्वारा सूखा खाद्यान्न वितरित करने, उचित मूल्य की दुकानों से खाद्यान्न प्राप्त होने, पशुओं के बीमा आदि से संबंधित जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर सभी ग्राम पंचायतों के सरपंच ने पेयजल, सड़क, बीमा क्लेम नहीं मिलने, ट्रांसफार्मर की आवश्यकता आदि के बारे में अवगत कराया।

इस अवसर पर सहायक यंत्री पीएचई केएस डामोर, आपूर्ति अधिकारी एचआर सुमन, जिला संयोजक सुश्री निशा मेहरा, विद्युत कार्यपालन यंत्री एसएन मरकाम एवं जिला पंचायत से आनंद राघव तिवारी उपस्थित थे।

चोरों ने सुने मकानों पर किया हाथ साफ

माही की गूंज, खच्चरटोड़ी। रम्भापुर चोकी के अन्तर्गत आने वाले मालटोडी गांव में चोरों ने चार सुने मकानों को अपना निशाना बनाया। इनमें से तीन घरों में कुछ भी कीमती सामान नही मिला। वही एक मकान सें चोरों ने एक सोने की अंगूठी, पोची(चैन), चांदी का कड़ा, चांदी के सिक्के, कंदोरा सहित 3 हजार 500 रुपए नकदी ले गए।

उक्त मकान बहादुरसिंह हाड़ा का है, वर्तमान में मेघनगर निवास होने के कारण यह घर सुना पड़ा है। जब सुबह हुई तो घर के बाहर वाले दरवाजे का ताला टुटा पडा था, श्री हाड़ा को इस घटना की जानकारी उनके भाई ने दी। श्री हाडा द्वारा घटना की जानकारी पुलिस को दी गई, सुचना मिलने पर मोके पर चोकी प्रभारी हरिसिंह चुडावत पहुचे। चोकी प्रभारी ने बताया कि, अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला पंजीबद्ध कर चोरों की तलाश शुरू कर दी है।

कलेक्टर ने किया खादी एवं विंध्या वैली ब्रांड की प्रदर्शनी का शुभारंभ

माही की गूंज, अलीराजपुर।

मप्र खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड भोपाल द्वारा खादी एवं विंध्या वैली ब्रांड की विभिन्न सामग्री की प्रदर्शनी का कलेक्टर श्रीमती सुरभि गुप्ता ने शुभारंभ किया। कलेक्टोरेट परिसर में महात्मा गांधी के चित्र पर सूत की माला अर्पित व दीप प्रज्जवलित कर उन्होंने प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। इस अवसर पर प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए विभिन्न उत्पादों को देखा और उनकी जानकारी ली। उक्त प्रदर्शनी में खादी ग्रामोद्योग एवं विध्य वैली ब्रांड के विभिन्न उत्पादों की प्रदर्शनी में सह विक्रय की व्यवस्था भी की गई है।

मप्र खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड इन्दौर के मैनेजर शैलेन्द्र व्यास ने बताया कि, उक्त प्रदर्शनी सह विक्रय केन्द्र 7 नवंबर तक कलेक्टोरेट परिसर में सुबह 11 बजे से शाम 7 बजे तक संचालित होगा।

जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक संपन्न

माही की गूंज, शाजापुर।

प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर आत्मनिर्भर निधि योजना एवं मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ विक्रेता योजना के क्रियान्वयन में हितग्राहियों को 10 हजार रूपए का ऋष्ण प्रदान करने में बैंकों द्वारा खराब प्रदर्शन करने पर कलेक्टर दिनेश जैन ने नाराजगी व्यक्त की। कलेक्टर श्री जैन की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक संपन्न हुई। इस अवसर पर कलेक्टर ने सभी बैंक अधिकारियों से जानना चाहा कि, स्ट्रीट वेंडर योजना के तहत ऋष्ण वितरण में क्या दिक्कत आ रही है। यदि कोई दिक्कत आ रही हो तो उसका समाधान किया जाएगा। कलेक्टर श्री जैन ने कहा कि, 10 हजार रूपए का छोटा सा ऋष्ण यदि छोटे-छोटे व्यवसायियों को प्रदान किया जाएगा तो इससे अर्थव्यवस्था का फ्लो बढ़ेगा। त्यौहारों के दौरान छोटे-छोटे पथ विक्रेता अपना व्यवसाय करते हैं।

उल्लेखनीय है कि, प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर आत्मनिर्भर निधि के तहत जिले के नगरीय निकाय शाजापुर, मक्सी, शुजालपुर, अकोदिया, पोलायकलां एवं पानखेड़ी द्वारा बैंकों में कुल 2 हजार 826 प्रकरण पोर्टल पर दर्ज किए थे, जिनमें से बैंकों द्वारा 867 प्रकरणों में हितग्राहियों को 10-10 हजार रूपए का ऋष्ण उपलब्ध कराया गया है। इसी तरह मुख्यमंत्री पथ विक्रेता योजना के तहत बैंकों के पोर्टल पर 5 हजार 915 प्रकरण दर्ज किए गए हैं, जिसमें से 571 प्रकरणों में ऋष्ण स्वीकृत किया गया है। इसी तरह पशु पालकों को क्रेडिट कार्ड दिए जाने की भी समीक्षा की गई। पशु पालक क्रेडिट कार्ड योजना में उज्जैन दुग्ध संघ, भोपाल दुग्ध संघ एवं पशुपालन विभाग द्वारा कुल 8 हजार 789 प्रकरण बैंकों को प्रस्तुत किए गए, जिसमें मात्र 357 पशु पालकों को क्रेडिट कार्ड वितरित हुए है।

बैठक में डीएलसीसी कार्यवृत्त की पुष्टि तथा विगत बैठक में दिए गए निर्देशों के पालन, वार्षिक साख योजना 2020-21 की समीक्षा की गई, इसी तरह आत्मनिर्भर सखी योजना, कृषि अधोसंरचना निधि, सीएम हेल्पलाइन तथा ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्था के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की समीक्ष की गई, साथ ही नाबार्ड कृषि अवसंरचना कोष, एग्री क्लिनिक एवं एग्री बिजनेस सेंटर व अन्य योजनाओं की जानकारी भी बैठक में दी गई।

शरद पूर्णिमा कार्यक्रम भजनो की प्रतियोगिता के साथ हुआ सम्पन्न

माही की गूंज, काकनवानी।

सिदेश्वर महादेव मंदिर काकनवानी पर शरद पूर्णिमा के अवसर पर ग्रामीण क्षेत्रो की भजन मंडलियों की प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमे प्रथम श्री राम भक्त मंडल दौलतपुरा, द्वितीय हरिदास बारिया भक्त मंडल काकनवानी एवं तृतीय शिव शक्ति सनातन मंडल गोरियाखांदन रहा। रात्रि 12 बजे तक चले भजनों को गांव के लोग बड़े आनंद मन से सुनते नजर आए। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री श्री 108 श्री राम बाबा (टाट बाबा) एवं शिव मंदिर समिति ने दीप प्रज्वलित कर किया। भजन प्रतियोगिता के पश्चात श्रद्धालुओ के द्वारा गरबा नृत्य किया गया, रात्रि 12 बजे आरती कर चंद्रमा की किरणों की अमृत धारा समाहित खीर सिदेश्वर मित्र मंडल के सदस्यों द्वारा प्रसादी स्वरूप वितरित की गई।

11 नवम्बर को होगा श्री श्याम कीर्तन का आयोजन

माही की गूंज, कुन्दनपुर। कृष्णपाल सिंह ठाकुर

एकादशी के पावन अवसर पर श्री श्याम कीर्तन का आयोजन कुन्दनपुर में किया जाएगा। किर्तन में इत्र वर्षा, पुष्प वर्षा, छप्पन भोग व अखण्ड ज्योत दर्शन के साथ 11 नवम्बर की शाम 7 बजे से कुन्दनपुर मे किया जाएगा। जिसमे प्रमुख गायक शुभम व आकाश गायिका सोनल शर्मा व सृष्टि सोलंकी अपने भजन प्रस्तुत करेंगे।

अलग-अलग दुर्घटना में तीन की मौत, चार लोग घायल, पिछले दिनों कई लोग बन चुके है काल का ग्रास

सीएचएमओ के अचेक निरक्षण ओर फटकार के बाद भी नही सुधरी स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्था, एक डॉक्टर के भरोसे पुरी व्यवस्था

माही की गूंज, पेटलावद।

पेटलावद सहित आसपास क्षेत्र में लगातार वाहन दुर्घटना बढ़ती जा रही है, शनिवार को दो अलग-अलग दुर्घटनाओं में एक महिला सहित तीन मौत हो गई और चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए, शनिवार देर शाम ग्राम रूपगढ-मोहनकोट के बीच एक मोटरसाइकिल का संतुलन बिगड़ने से बाइक पर बैठी एक महिला की मौत हो गई, जबकि तीन लोग घायल हो गए। घायलों को डायल 100 व 108 की मदद से पेटलावद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, घायलों को इलाज के लिए ले जाने के लिए न तो पर्याप्त कर्मचारी थे न ही स्ट्रेचर जिसके चलते अस्पताल परिसर में मौजूद लोगों को डायल 100 के पुलिस जवानों द्वारा हाथों में उठाकर इलाज के लिए ले जाना पड़ा, इससे पूर्व रतलाम-बामनिया के बीच भी दो मोटरसाइकिल की आपस में भिड़ंत होने में एक व्यक्ति की घटनास्थल पर ही मौत हो गई जबकि एक व्यक्ति की मौत इलाज के दौरान अस्पताल में हो गई। पिछले दिनों में पेटलावद क्षेत्र में वाहन दुर्घटना के मामलो में भारी व्रद्धि हुई है जिसमे कई लोग दम तोड़ चुके हैं, तो कई घायल आज भी जीवन और मौत की जंग लड़ रहे हैं। ज्यादतर दुर्घटनाओं में दोपहिया वाहन चालक ही काल का ग्रास बने हैं और एक भी दुर्घटना में किसी वाहन चालक के पास हेलमेट नही था जो की कई मौतो में मुख्य कारण भी बना।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में नही मिल पा रहा समय पर इलाज

विगत दिनों जिला स्वास्थ्य अधिकारी जयपाल सिंह ठाकुर अस्पताल के अचेक निरक्षण में अस्पताल में मौजूद डॉक्टर और स्टाफ के अनुपस्थिति होने के कारण नाराजगी व्यक्त करते हुए फ्टकार लगाई थी, लेकिन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की हालत में कोई बड़ा सुधार नही हुआ, शनिवार को हुई दुर्घटना में घायलो के इलाज के लिए अस्पताल में पर्याप्त स्टाफ नही था अस्पताल में एक ही डॉक्टर मौजूद रहा जिससे सभी घायलों को इलाज में परेशानी से जूझना पड़ा, वही एक के बाद एक तीन मौत के बाद मृतको के परिजनों के विलाप के चलते पूरे हॉस्पिटल परिसर में चित पुकार मच गई, ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर ओर स्टाफदुर्घटना में आए घायलों में संभालने में लग गए तो बाकी भर्ती मरीज़ों की ओर ध्यान देने वाला कोई नही बचा ऐसे में भर्ती मरीज़ों में किसी की हालत बिगड़ी तो उनको समय पर इलाज नही की दशा में उसकी जान भी जा सकती है।

प्राइवेट इलाज में लगे हैं स्टाफके अधिकांश डॉक्टर

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में पदस्थ डॉक्टरों में से कई डॉक्टर अपनी आवास, क्लीनिक या फिर अपने निजी हॉस्पिटल में प्राइवेट प्रेक्टीस में लगे रहते है, कहने को तो हॉस्पिटल परिसर में ही स्टाफके डॉक्टरों ने शासकीय आवास आबंटित करवा रखे हैं जो केवल दिखावे के लिए है, रात में आने वाले गम्भीर मामलो के समय ये अपने निजी आवास पर ही रहते हैं और जरूरत के समय उपलब्ध नही हो पाते।

आम आदमी अपने अधिकारों के लिए पस्त

वही जनप्रतिनिधि सरकार बनाने-गिराने व दल बदल में व्यस्त

माही की गूंज, शाजापुर।

स्वतंत्रता वास्तव में भारतीय लोकतंत्र जनता के द्वारा जनता के लिए आधारभूत सुविधाएं सुलभ हो ऐसी व्यवस्था का निर्माण करने की प्रणाली का नाम है, जिसमें प्रशासनिक अधिकारी एवं चुने हुए जनप्रतिनिधि आम आदमी को अपने सर्वांगीण विकास के लिए प्रत्येक अवसर अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, इस तरह की नीतियों का निर्माण करना होता हैं। परंतु लोकतंत्र की सार्थकता को तब ग्रहण लग रहा है जब कुछेक अवसरवादी व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लाभ को सर्वोपरी मानते हुए इन नीतियों का दुरुपयोग करते हैं, जिसका परिणाम हम सब वर्तमान में उपचुनाव के रूप में देख रहे हैं एवं भ्रष्टाचार रूपी महादानव आम आदमी के समक्ष मुंह ताने हुए खड़ा प्रतीत होता है। लोकतंत्र में आम आदमी को न्याय एवं अधिकार पाने और अन्याय की रोकथाम का एक मात्र उपाय है, गांधीवादी प्रतिकार। परंतु आम आदमी के प्रतिकार को येन-केन प्रकरेण कुचल दिया जाता है, जो वास्तव में एक तरह से लोकतंत्र की हत्या ही माना जा सकता है। दूसरी और यदि इसी आम आदमी के प्रतिकार को जनप्रतिनिधि एवं प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा संज्ञान में लेकर उचित कार्रवाई की जाए तो लोकतांत्रिक व्यवस्था को सार्थक बनाया जा सकता है।

मुकेश बंजारा हुआ जिला बदर

माही की गूंज, रतलाम। 3 नवम्बर कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी गोपालचंद्र डाड द्वारा थाना स्टेशन रोड रतलाम निवासी मुकेश पिता शांतिलाल बंजारा को 6 माह के लिए जिला बदर किया था। पुलिस अधीक्षक के प्रतिवेदन पर जिला दंडाधिकारी द्वारा मध्यप्रदेश राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 5 के अधीन प्रदत शक्तियों का उपयोग करते हुए आरोपी को जिला बदर अवधि में रतलाम जिले की राजस्व सीमा तथा समीपवर्ती उज्जैन, आगर, धार, झाबुआ, मंदसौर जिले की राजस्व सीमाओं में प्रवेश नहीं कर सकेगा।

दीपावली पर मिल सकता है आवास हितग्राहियों को तोहफा

अंतिम चरण में प्रधानमंत्री आवास की अटकी फाइल, राशि लेप्स हुई तो भाजपा के लिए मुसीबत बनेगी योजना

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

नगर विकास की रुकी पड़ी गति और आरओ वाटर की लाइन के ठेकेदार द्वारा नगर में जगह-जगह सड़क को भारी नुकसान पहुचाकर नगर की दशा बिगाड़ने के कारण परिषद लगातार घिरी हुई हैं। ऊपर से प्रधानमंत्री आवास के 202 हितग्राहियों की सूची पिछले दो साल से अटकी पड़ी है जो परिषद के गले की हड्डी बन चुकी है। आवास हितग्राहियों के नाम से शासन द्वारा पहली किश्त में दो करोड़ से अधिक की राशि बैंक में जमा हो चुकी है जिसके लेप्स होने की चर्चा ने भी अब जोर पकड़ लिया हैं। मकान के सपने सजाये आवास हितग्राही की उम्मीदे भी धीरे-धीरे दम तोड़ रही हैं जो नगर परिषद से लेकर विधायक, सांसद और मुख्यमंत्री से गुहार लगा चुके हैं, जहा से अब तक कोई अच्छी खबर नही आई, लेकिन अब परिषद के लगातार प्रयास के बाद उम्मीद जगी हैं कि, जल्द ही आवास हितग्राहियों की पहली किश्त का भुगतान हो सकता है। यदि सब कुछ ठीक रहा तो दीपावली के पूर्व ही जिला कलेक्टर रोहित सिंह आवास की सौगात नगर को देकर हितग्राहियों की दीपावली पर बड़ी खुश खबरी दे सकते है।

तीन सदस्यीय कमेटी का किया है गठन

मिली जानकारी के अनुसार जिला कलेक्टर रोहित सिंह ने पेटलावद से लगातार उठ रही मांग और सीएम हेल्पलाइन पर एक के बाद एक दर्ज हो रही शिकायत के बाद आवास की अटकी पड़ी फाइल में रुचि लेते हुए आवास की फाइल की बची प्रक्रिया निपटाने के लिए तीन सदस्यीय टीम का गठन किया है, जिसमे अपर कलेक्टर झाबुआ, जिला पंचयात सीईओ और डूडा के अधिकारी को शामिल किया है, जो जल्द ही अपनी अंतिम रिपोर्ट जिला

कलेक्टर को पेश करेंगे, जिसके बाद फाइल पर जिला कलेक्टर की भुगतान रिलीज़ करने हेतु हस्ताक्षर होंगे।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार गठित टीम अपनी अंतिम रिपोर्ट जल्द ही कलेक्टर को पेश कर देंगे, नगर परिषद अध्यक्ष महनोहलाल भटेवरा का कहना है कि, आवास योजना का लाभ जल्द हितग्राहियों तक पहुचे इसका प्रयास किया जा रहा हैं, अब तक जो दस्तावेज और जानकारी शासन द्वारा मांगे गए हैं वो उपलब्ध करवाए गए हैं, जिसके बाद जिला कलेक्टर ने आश्वस्त किया है कि, जल्द से जल्द बची प्रक्रिया को निपटाकर आवास हितग्राहियों तक योजना का लाभ पहुचाया जाएगा।

लगातार सुर्खियों में आवास का मामला

देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की महत्त्वकाशी आवास योजना के अंतर्गत 2023 तक सभी को पक्के मकान देने की योजना है। लेकिन पेटलावद में 202 लोगो के आवास स्वीकृति होकर राशि जमा होने के बाद भी योजना का लाभ नही मिल पाया है, जो बड़ा मामला बन चुका है और लगातार सुर्खियों में है। एक ओर मीडिया पूरे मामले को खास कवरेज देकर केंद्र सरकार के नुमाइंदे सांसद गुमान और भाजपा की परिषद होने के बाद भी योजना का लाभ मिलने में हो रही देरी को लेकर घेर रहे हैं तो, आवास के हितग्राही भी समय-समय पर परिषद का घेराव कर परिषद पर लगातार दबाव बनाए हुए है। वही 15 माह की कांग्रेस सरकार पर भी योजना में रोड़ा अटकाने के आरोप लगते रहे हैं। यदि परिषद के खाते में जमा राशि लेप्स होकर हितग्राहियों को योजना का लाभ अब नही मिलता है तो, ये मुद्दा आने वाले सभी चुनाव में अहम होकर न केवल पार्षदों बल्कि अध्यक्ष, विधायक और सांसद तक के चुनाव में प्रत्याशी और जनप्रतिनिधियों के सामने बड़ी चुनौती के रूप में सामने आएगा ये तय है।

तालाब की पाल से रिसकर पानी आने से किसान परेशान

पानी में रहकर काटनी पड़ती है पहली फसल, आज तक नहीं मिला कोई मुआवजा

माही की गूंज, खच्चरटोड़ी।

ग्राम पंचायत में कई दशको पुराना एक तालाब है, इस तालाब की पाल से करीबन 1 दर्जन जगहों से पानी का रिसाव हो रहा है, यह रिसाव कई सालों से ऐसे ही हो रहा है। पाल से रिसकर निकला यह पानी 20 किसानों की 8 हैक्टेयर भूमि व कैथोलिक डायसिस पंचकुई चर्च की 1 हैक्टेयर भुमि को दलदल जैसा बना देता है। ये किसान तलाईनुमा भुमि होने के कारण चावल की खेती करते है, जब यह चावल की खेती पकती है तो इन किसानो को ये चावल की फसल इस दलदल में काटनी पडती है। वही पानी होने के कारण यह किसान रबी की फसल भी नही ले पाते है। गूंज को इन किसानों ने अपनी पीड़ा बताई कि, पानी में फसल होने के कारण मजदुर नही आते है और जो आते है तो उन्हे ज्यादा मजदुरी देनी पडती है, पानी होने के कारण जानवरो का भी डर रहता है, यदि यह फसल गिर जाती है तो, उस साल बीज तक का पैसा नही निकलता है।

आज तक कोई मुआवजा नही

किसान की इन तलाईयों मे तालाब से रिसकर आए पानी के कारण यह ठीक से पहली फसल भी नही ले पाते है कई बार तो पहली फसल पानी में गिर जाने से फसल सड़ जाती है। पानी का रिसाव कई वर्षो से हो रहा है, लेकिन किसानों को मुआवजे की बात तो दुर आज तक कोई सर्वे भी नही किया गया। हर बार जनप्रतिनिधि चुनाव के समय गांव मे

आते हैं तो, सिर्फ आश्वासन देकर चले जाते है लेकिन समस्या का कोई समाधान नही होता है।

इन किसानों की भुमि

अर्जुन कट्ठा, जगदीश कट्ठा, गरवर कट्ठा, सुभाष पंचाल, गणपत पंचाल, अमरसिंह साबलिया, रमेश साबलिया, मोतेसिंह बागडिया, नन्दराम पंचाल, छतरसिंह खतोडिया, जवानसिंह खतेडिया, अमरसिंह टगरिया, बापु पडवाल, मनोहर पंचाल, सबुर पंचाल, रमेश पंचाल, ईश्वर पंचाल।

आग लगने से मकान हुआ खाख, आग में झुलसी मवेषी भी

माही की गूंज, परवलिया। शनिवार रात करीब एक बजे राजेश पिता रामलाल पाटीदार के मकान में अज्ञात कारण से आग लग गई, आग इतनी भयंकर थी कि घर में रखा सामान मकान के साथ खाख हो गया व अंदर बंधे मवेशी भी उसकी चपेट में आ गए, जिनमे से एक गाय आग की लपटों से झुलस गई जिस वजह से उसकी चमड़ी जल गई, जिसे समय रहते पड़ोसियों की सहायता से बाहर निकाला और आग पर काबू पाया गया। आग पर काबू पाने के बाद अग्निशामक दल मोके पर पहुँचा, आग लगने से अंदर रखा सामान घास, भूसा, कंडे विद्युत केबल व कृषि सामग्री जलकर राख हो गए। जिससे करीब 70 से 80 हजार का नुकसान का अंदाजा लगाया जा रहा है, रात्रि गस्त कर रहे चौकी प्रभारी ने भी मोके पर आकर मोके का जायजा लिया था।

रोहिणी नक्षत्र में मनाया गया करवा चौथ, महिलाओं ने की पति की लंबी उम्र की कामना

माही की गूंज, झाबुआ।

करवा चौथ का पर्व कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। जहां तक जिले में बाहर से आए अनेक उत्तर भारतीय परिवार से इसका प्रचलन बढ़ सा गया है। जिसके कारण वनांचल में भी यह व्रत अब काफी लोकप्रिय हो रहा है। इसमें महिलाएं अपने पति की लंबी आयु की कामना पूरे दिन निर्जला उपवास रखकर व्रत करती है जिसे शाम को चांद उदय होने के बाद छलनी में पति का मुख देखकर उनके हाथों से पानी ग्रहण करते हुए अपना व्रत खोलती है।

इस बार 1950 के बाद करीब 70 वर्षो के बाद 4 नवंबर को ऐसा योग बना, इस दिन रोहिणी नक्षत्र और मंगल का योग एक साथ आया, करवाचौथ पर रोहिणी नक्षत्र का संयोग होना अपने आप में एक अद्भुत योग है जो करवा चौथ को और अधिक मंगलकारी होता है।

आइए जानते हैं इन शुभ योगों के बारे में

इस बार जहां करवा चौथ पर सर्वार्थ सिद्धि योग बना है, वहीं शिवयोग, बुधादित्य योग, सप्तकीर्ति, महादीर्घायु और सौख्य योग का भी निर्माण हुआ। ये सभी योग बहुत ही महत्वपूर्ण हैं और इस दिन की महत्ता और भी बढ़ाते हैं। करवा चौथ पर बुध के साथ सूर्य ग्रह भी विद्यमान रहा, जो बुधादित्य योग बना रहे हैं। इस दिन शिवयोग के साथ ही सर्वार्थसिद्धि, सप्तकीर्ति, महादीर्घायु और सौख्य योग कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि सर्वार्थ सिद्धि योग एवं मृगशिरा नक्षत्र में चतुर्थी तिथि का समापन 5 नवंबर को प्रातः 5:14 बजे हुआ।

इनकी होती है पूजा

करवा चौथ के दिन मां पार्वती, भगवान शिव, कार्तिकेय एवं गणेश सहित शिव परिवार का पूजन किया जाता है। मां पार्वती से सुहागिनें अखंड सौभाग्य की कामना करती हैं, इस दिन करवे में जल भरकर कथा सुनी जाती है, महिलाएं सुबह सूर्योदय से लेकर चंद्रोदय तक निर्जला व्रत रखती हैं और चंद्र दर्शन के बाद ही व्रत खोलती हैं।

गूंज असर

शराब माफियाओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई करें - एसपी तिवारी

राजस्थान पाइंट पर वाहन चेकिंग के थाना प्रभारियों को दिए निर्देश

माही की गूंज, रतलाम। राघवेन्द्रसिंह डोडिया

जिले के पिपलौदा थाना क्षेत्र में शराब माफिआओं तथा अवयस्क वाहन चालकों के खिलाफ मुहिम चलाकर कार्रवाई कर नगर की यातायात व्यवस्था में सुधार किया जाएगा। इसको लेकर दिशा निर्देश दिए व नगर में बने नवीन थाना भवन का निरीक्षण करने के बाद पुलिस अधीक्षक गौरव तिवारी ने नवागत थाना प्रभारी प्रशिक्षु आईपीएस विनोद मीणा को निर्देश दिए। पुलिस अधीक्षक ने लगभग 35 मिनट के औचक निरीक्षण में थाने की गतिविधियों की जानकारी लेकर पत्रकारों से चर्चा की। उन्होंने बताया कि, जिले में शराब माफिआओं के खिलाफ चल रहे अभियान में अब ठेकेदारों के पर्ची सिस्टम से बिकने वाली शराब को भी शामिल किया गया है। नगर में आहता व्यवस्था व एक ही स्थान पर अंग्रेजी तथा देशी शराब की दुकानों का संचालन व्यवस्था का संपूर्ण निरीक्षण थाना प्रभारी करेंगे तथा निर्धारित मापदंडों के आधार पर नहीं होने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। तिवारी ने जुआं-सट्टा को सामाजिक बुराई बताते हुए इस पर रोक लगाने के लिए जागरूकता अभियान के साथ ही सट्टोरियो को नहीं बख्शा जाएगा। नगर सुरक्षा समिति तथा ग्राम रक्षा समितियों को जागृत किया जाएगा तथा इनके माध्यम से ग्रामों में होने वाले अपराधों पर अंकुश लगाने का प्रयास किया जाएगा। इन समितियों का सम्मेलन आयोजित कर नवीन सक्रिय सदस्यों को जोड़ा जाएगा।

चोरिया रोकने के लिए व्यापारियों के साथ की बैठक

चोरियो को रोकने के लिए नगर के सभी बड़े व्?यापारियों की बैठक आयोजित कर नगर के प्रमुख चौराहों पर सीसीटीवी कैमरे लगवाने तथा अपनी दुकान के बाहर भी कैमरों की व्यवस्था करने के लिए प्रेरित करने के निर्देश भी नवागत थाना प्रभारी को दिए। श्री तिवारी ने स्वयं मौके पर उपस्थित रहकर उन स्थानों को चिन्हित किया जहां दुर्घटनाओं का अंदेशा रहता है। नगर के जावरा-सैलाना मार्ग स्थित नाका नं.1 पर वाहनों की गति पर विराम लगाने के लिए अपनी उपस्थिति में बैरिकेट लगवाए। दो पहिया वाहन चालकों को सिर्फ नगरीय क्षेत्र में हेलमेट की छूट है, लेकिन नगर के बाहर सभी स्थानों पर चैकिंग पाइंट स्थापित कर वाहन चालकों को यातायात नियमों से अवगत करवाते हुए प्रथमबार हिदायत दें तथा इसके बाद सख्त कार्रवाई करें, जिससे वाहन चालकों की सुरक्षा के साथ ही दुर्घटनाओं को रोकने में भी सुविधा मिलेगी।

राजस्थान सीमा पर अवैध शराब व मादक पदार्थों की तस्करी रोकने के लिए चेक पॉइंट

नगर में चर्चा के बाद पुलिस अधीक्षक तिवारी व थाना प्रभारी विनोद मीणा के साथ सुखेड़ा चौकी पहुँचे तथा त्यौहारों की जानकारी लेकर राजस्थान सीमा पर शराब सहित अन्य मादक पदार्थों की तस्करी पर रोक लगाने के लिए चैकिंग पाइंट बनाने के निर्देश चौकी प्रभारी अशोकसिंह तोमर को दिए, इस दौरान उपनिरीक्षक रविन्द्र मालवीय भी मोजूद रहे।

गूंज की खबर का असर

माही की गूंज ने शराब माफिआओ को लेकर खबर को प्रमुखता प्रक्राशित किया था, जिसको देखते हुए रतलाम पुलिस अधीक्षक गौरव तिवारी ने संज्ञान लेते हुए पिपलोदा थाने पर पहुचे ओर राजस्थान से परिवहन होकर आ रही अवैध शराब और वाहन चैकिंग पांइट लगाने की बात कही, वही दिशा निर्देश दिए गए कि, शराब माफिआओ के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान को सक्रिय कर कार्रवाई की जाए।

अटेचमेंट के नाम पर हो रही बड़ी लेन-देंन

एक मात्र स्टाफ नर्स को भी कर दिया पेटलावद अटेच

माही की गूंज, बामनिया।

स्वास्थ्य व्यवस्था के संचालन हेतु शासन ने विभिन्न पदों पर कर्मचारियों की भर्ती की है लेकिन कर्मचारी के मनमाने स्थान पर कार्य करने की मंशा ने अधिकारियों के लिए पैसा बनाने के अवसर पैदा कर दिए, जिसके लिए अधिकारी शासन के निर्देशों का उलंघन करने से भी नही चूकते, मामला स्वास्थ्य विभाग में सामने आया है, जहा पूरे विभाग में अटेचमेंट का बड़ा खेल चल रहा है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बामनिया में स्टाफ की कमी से उभारने के लिए जनप्रतिनिधियों के प्रयास से स्टाफ नर्स का पद एक मात्र स्वीकृत करवाया था और उक्त पद पर सुश्री सोभंगी शर्मा की नियुक्ति हुई, लेकिन मेडम का मोह बामनिया से कुछ ही समय मे भंग हो गया और अपनी उपस्थिति सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पेटलावद में करवाने के लिए प्रयास में जुट गई, लेकिन अटेचमेंट की व्यवस्था नही होने से स्टाफ नर्स सुभांगी शर्मा पेटलावद नही पहुच पा रही थी, लेकिन स्वास्थ्य विभाग के पूर्व जिला स्वास्थ्य अधिकारी बारिया ने अपने रिटारमेंट से पूर्व बड़ा माल कमाने के उद्देश्य से पूरे जिले में कई अटेचमेंट कर दिए जसमे बामनिया की एक मात्र स्टाफ नर्स का नाम भी शामिल हैं। पूर्व मुख्य चिकित्सक एवं स्वास्थ्य अधिकारी झाबुआ डॉ. बी.एस. बारिया ने सिविल हॉस्पिटल पेटलावद में स्टाफ नर्स की कमी बताते हुए बामनिया की एक मात्र स्टाफनर्स को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पेटलावद में अटेच कर दिया और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बामनिया की एक मात्र संविदा स्टाफ नर्स के भरोसे छोड़ दिया। स्थानीय जनप्रतिनिधियों के स्टाफबढ़ाने और हॉस्पिटल की सुविधा बढ़ाने के उद्देश्य पर पानी फेर दिया और नियम विरुद्ध स्टाफनर्स को पेटलावद भेज दिया गया। पेटलावद बीएमओ एमएल चौपड़ा का कहना है कि, जिला अधिकारी के निर्देशों का पालन किया गया है अटेचमेंट करने का अधिकार मेरे पास नहीं है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422